अप्रैल: 2022 वर्ष : 5 अंक : 7

सिफरी मासिक समाचार

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

संस्थान का मासिक समाचार, अप्रैल 2022 आपके समक्ष प्रस्तुत है।

भारत एक समृद्ध सांस्कृतिक विविधता वाला देश है, और यहां मनाए जाने वाले त्यौहार इसकी सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक हैं। प्रत्येक त्योहार का अपना महत्व है जो भाईचारे का संदेश के साथ देश की विविधता को दर्शाता है। अप्रैल माह को एक फसल उत्सव का महीना माना जाता है अर्थात कृषि के क्षेत्र में एक नई शुरुआत। यह वह समय है जब किसान अपनी रबी की फसल काटने के लिए तैयार रहते हैं और सबमें एक खुशी की लहर व्याप्त रहती है।

हमारे देश में अप्रैल माह में कई त्यौहार मनाए जाते हैं- जैसे (1)पश्चिम बंगाल में नववर्ष तथा असम का प्रमुख त्योहार, बिहू। बिहू नृत्य, बिहू गीत, स्वादिष्ट असमिया व्यंजन, अन्य पारंपरिक रीति-रिवाज के साथ इस पर्व को मनाते हैं। (2) पंजाब में मनाया जाने वाला बैसाखी जो यह फसल उत्सव के रूप मनाया जाता है, लेकिन इसका ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व भी है। यह सिख नव वर्ष के पवित्र अवसर पर मनाया जाता है। (3) ट्यूलिप त्योहार भारत के अप्रैल में पहले और दूसरे सप्ताह में मनाया जाने वाला सबसे अच्छा त्योहार है। यह श्रीनगर के प्रसिद्ध इंदिरा गांधी मेमोरियल ट्यूलिप गार्डन में आयोजित किया जाता है जहां 40 से अधिक किस्मों के ट्यूलिप फूलों को प्रदर्शित किया जाता है। इस उत्सव के दौरान पूरा जम्मू और कश्मीर राज्य ताजगी और रंगों से सजा होता है। (4) एओलिंग महोत्सव नागालैंड की कोन्याक जनजाति द्वारा बीज बोने के बाद अप्रैल के महीने में मनाया जाता है। (5) नेनमारा वल्लंगी वेला धान की फसल के उत्सव का प्रतीक है और केरल राज्य में भव्य तरीके से मनाया जाता है। यह त्यौहार उन प्रतियोगिताओं को प्रदर्शित करता है जो दो पड़ोसी गांवों के बीच आयोजित की जाती हैं जैसे संगीत कार्यक्रम और विभिन्न सांस्कृतिक प्रदर्शन। (6) गुड़ी पड़वा पर लोग पारंपरिक तेल स्नान से इस अवसर की शुरुआत करते हैं, जिसके बाद

वे अपने घरों को सजाते हैं और नए कपड़े पहनते हैं। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण फूलों और रंगों का उपयोग करके बनाई जाने वाली रंगोली है।

17 मार्च को संस्थान का स्थापना दिवस पड़ता है। गत वर्ष कोविड महामारी के चलते स्थापना दिवस का आयोजन धूमधाम से नही किया जा सका था। परन्तु इस वर्ष स्थापना दिवस को नये सभागार में भारत सेवाश्रम संघ के सहायक सचिव, संस्थान के पूर्व निदेशक सहित कई गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में किया गया। इस अवसर पर संथान में आयोजित वार्षिक खेल प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पदक मुख्य अतिथि और सम्मानित अतिथियों द्वारा प्रदान किए गये ।

'भारत की आजादी का अमृत महोत्सव' के अंतर्गत संस्थान भी प्लेटिनम जुबली व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन कर रहा है । इसी श्रृंखला में प्रो. भास्करन मणिमारन, तमिलनाडु डॉ. जे जयललिता फिशरीज यूनिवर्सिटी, नागापट्टिनम के पूर्व कुलपति एवं प्रो. एस. के. सान्याल, पूर्व कुलपति, बिधान चंद्र कृषि विश्वविद्यालय, कल्याणी द्वारा व्याख्यान दुए गये।

इस अवसर पर संस्थान में मार्च 2022 के दौरान बहुत ही महत्वपूर्ण गतिविधियों का निरूपण किया गया जिसमें सबसे महत्वपूर्ण इंडियन फिशरीज आउटलुक 2022 का आयोजन था। इस मेगा सम्मेलन की परिकल्पना इसके आयोजन के केवल 2 महीने पहले अर्थात जनवरी 2022 में की गई और इतने कम समय में इसका सफल कार्यवेयन किया गया। इसका श्रेय मैं संस्थान कर्मियों को देना चाहता हूँ जिनके अथक प्रयास के कारण इतने काम समय में ऐसे भव्य कार्यक्रम का आयोजन संभव हो पाया, क्योंकि "असीमित उत्साहवान व्यक्ति लगभग प्रत्येक कार्य में सफल होता है।" - चार्ल्स श्वॉब।

धन्यवाद,

(बसन्त कुमार दास)

इंडियन फिशरीज आउटलुक 2022 की झलक

इंडियन फिशरीज आउटलुक 2022 (IFO2022)

“सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में भारतीय मत्स्य पालन को बढ़ावा” सम्मेलन का उद्घाटन

इंडियन फिशरीज आउटलुक 2022 - “सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में भारतीय मत्स्य पालन को बढ़ावा देना” विषय पर आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), बैरकपुर, कोलकाता में दिनांक 22 मार्च 2022 को हुआ। इस सम्मेलन का आयोजन दिनांक 22 से 24 मार्च 2022 के बीच सिफरी बैरकपुर, पश्चिम बंगाल द्वारा इनलैंड फिशरीज़ सोसायटी ऑफ इंडिया और प्रोफेशनल फिशरीज ग्रेजुएट फोरम (पीएफजीएफ), मुंबई के सहयोग से किया गया। सम्मेलन का उदघाटन मुख्य अतिथि, श्री बंकिम चंद्र हाजरा, माननीय मंत्री, सुंदरबन मामले और विकास, पश्चिम बंगाल सरकार के कर-कमलों से हुआ। कार्यक्रम के सम्मानित अतिथियों में स्वामी सुपर्णानन्द महाराज, मानद सचिव, रामकृष्ण मिशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर, कोलकाता; डॉ. रिजी जॉन, कुलपति, केरल यूनिवर्सिटी ऑफ फिशरीज एंड ओशन स्टडीज (KUFOS) प्रमुख थे। उद्घाटन समारोह डॉ. जे के जेना, उप महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में पीएफजीएफ के महासचिव, डॉ. बी बी नायक ने सम्मेलन और इसके विषय-वस्तु के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि सिफरी, बैरकपुर; इनलैंड फिशरीज़ सोसायटी ऑफ इंडिया, बैरकपुर और प्रोफेशनल फिशरीज ग्रेजुएट फोरम, मुंबई के समन्वित सहयोग से इस सम्मेलन का आयोजन संभव हो सका है और इसका उद्देश्य सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में देश के मत्स्य पालन पर ध्यान केंद्रित करना है।

डॉ. बि के दास, निदेशक, सिफरी, बैरकपुर और अध्यक्ष, पीएफजीएफ ने अपने स्वागत सम्बोधन में सम्मेलन के विषय के महत्व पर प्रकाश डालते हुए देश में अंतर्स्थलीय

मात्स्यिकी और इसके प्रबंधन की स्थिति को बताया। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन मत्स्य पालन और जलीय कृषि से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं, सलाहकारों, छात्रों तथा अन्य हितधारकों के बीच विचारों का आदान-प्रदान करने, जानकारी साझा करने, और सहमति बनाने के लिए एक मंच प्रदान करेगा।

डॉ. जे के जेना, उप-महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान) भारतीय कृषि अनुसंधान, नई दिल्ली तथा उदघाटन कार्यक्रम के अध्यक्ष ने अपने संबोधन में भारतीय कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था उन्नयन में मत्स्य पालन क्षेत्र के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि मत्स्य पालन और जलीय कृषि के लिए सतत विकास लक्ष्य जैसे भूखमरी उन्मूलन का लक्ष्य, उत्तम स्वास्थ्य और जन कल्याण, जलीय जीवन और स्थल जीव आदि अधिक प्रासंगिक हैं। उन्होंने कहा कि अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन और जलीय कृषि का भारत के मत्स्य पालन में 65 प्रतिशत से अधिक योगदान है और जलीय पारिस्थितिकी तंत्र, उनके जैविक समुदायों और मत्स्य पालन पर जल की वेग गति, प्रदूषण, अनियमित वर्षा, वैश्विक तापमान वृद्धि, जलीय संसाधनों का अति-दोहन, मछलियों का अनियंत्रित शिकार के कारण हानिकारक प्रभाव पड़ रहा है। उनके अनुसार प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत 22 मिलियन टन मछली उत्पादन के लक्ष्य के साथ, इस क्षेत्र में और अधिक निवेश करने और अधिक उद्यमियों को लाने का समय आ गया है। डॉ. रिजी जॉन, कुलपति, केयूएफओएस और विशिष्ट अतिथि ने अपने संबोधन में भारत में मत्स्य पालन क्षेत्र के महत्व पर बात की। उन्होंने कहा कि वर्ष 1969 में भारत में केवल एक मात्स्यिकी महाविद्यालय था, लेकिन वर्तमान में तीस कॉलेज हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि मछली अब न केवल

सस्ते प्रोटीन के रूप में बल्कि स्वास्थ्यवर्धक भोजन के रूप में भी पहचानी जाने लगी है। प्रौद्योगिकियों के विकास के साथ, प्रग्रहण मात्स्यिकी अब उत्पादन विज्ञान के रूप में परिचित होने लगा है।

श्री बंकिम चंद्र हाजरा, माननीय मंत्री सुंदरबन मामले और विकास, पश्चिम बंगाल सरकार ने मुख्य अतिथि के रूप में अपने संबोधन में पश्चिम बंगाल और भारत के आर्थिक विकास में मत्स्य क्षेत्र द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए भारतीय जलीय कृषि में वर्तमान प्रगति, स्थायी मत्स्य पालन के लिए मत्स्य संसाधन प्रबंधन, मत्स्य उत्पादन में सुधार के लिए जैव प्रौद्योगिकी हस्तक्षेप, टिकाऊ मत्स्य पालन के लिए स्वास्थ्य और पर्यावरण प्रबंधन, मत्स्य पालन के बाद की तकनीक और मूल्य संवर्धन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान केन्द्रित करने की आवशयकता है। स्वामी सुपर्णानन्द महाराज, मानद सचिव, रामकृष्ण मिशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर, कोलकाता एवं सम्मानित अतिथि ने अपने संबोधन में यह आशा व्यक्त की कि यह सम्मेलन भविष्य के लिए उपयोगी दिशा-निर्देश बनाने पर कार्य करेगा। उन्होंने पी सी थॉमस वक्तृता के अंतर्गत हमारे देश की सभ्यता, संस्कृति, विज्ञान और धर्म जैसे विभिन्न विचारों पर चर्चा की। उन्होंने जोर दिया कि जहां विज्ञान और संस्कृति दो रंगों के समान हैं वही विज्ञान और धर्म दो विपरीत ध्रुव हैं। सभ्यता और विज्ञान और प्रौद्योगिकी एक दूसरे के साथ हैं और एक दूसरे के पूरक भी। संस्कृति मन का विकास है जबकि विज्ञान प्रकृति की बाहरी खोज का परिणाम होता है। उन्होंने स्वामी विवेकानंद की विभिन्न संदेशों और दर्शन के बारे में बताया।

इस अवसर पर इनलैंड फिशरीज सोसाइटी ऑफ इंडिया, बैरकपुर की मानद फैलोशिप से प्रो. पी सी थॉमस, पूर्व निदेशक, मात्स्यिकी महाविद्यालय, कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, ओडिशा और डॉ. ए. एकनाथ, पूर्व महानिदेशक, नाका (The Network of Aquaculture Centres in Asia-Pacific) तथा पांच शोधकर्ताओं, प्रो. जे अब्राहम, डा. पीसी दास, डा एम ए खान डा जे के सुंदराय को सम्मानित किया गया। साथ ही, संस्थान के प्रकाशनों का विमोचन किया गया। सम्मेलन में 500 से अधिक शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों, छात्रों, उद्योगों के प्रतिनिधियों और पश्चिम बंगाल के 100 किसानों ने भाग लिया।

इस तीन दिवसीय सम्मेलन में कई तकनीकी सत्रों के साथ देश के समस्त मात्स्यिकी महाविद्यालयों के संकाय अध्यक्ष बैठक (ऑनलाइन) तथा उद्योग-संस्थान इंटरफेस मीट का भी आयोजन किया गया।

सम्मेलन में 500 से अधिक शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों, छात्रों, उद्योगों के प्रतिनिधियों तथा 200 किसानों ने भाग लिया और विचार-विमर्श किया।

इंडियन फिशरिज आउटलूक 2022 के दौरान "हिलसा संवाद: बंगाल की खाड़ी (बीओबीपी) के परिप्रेक्ष्य में" पर सैटेलाइट संगोष्ठी का आयोजन

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकीअनुसंधान संस्थान (सिफरी) मुख्यालय, बैरकपुर में 'हिल्सा संवाद पर एक उपग्रह संगोष्ठी: बंगाल की खाड़ी (बीओबी) के परिप्रेक्ष्य में' पर सैटेलाइट संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 23 मार्च 2022 को किया गया। यह सर्वविदित है कि बांग्लादेश का कुल हिलसा पकड़ में 70% से अधिक का योगदान रहता है और उसके बाद भारत और म्यांमार आते हैं। पर यह देखा जा रहा है कि भारत में पिछले कुछ दशकों में हिलसा के उत्पादन में तेजी से गिरावट आई है। इसलिए, भारत, बांग्लादेश, म्यांमार और नॉर्वे के हिल्सा विशेषज्ञों के बीच वैज्ञानिक सूचना आदान-प्रदान के माध्यम से हिल्सा संरक्षण और प्रसार की दिशा में एक क्षेत्रीय नीति और प्रबंधन योजना विकसित करने के लिए यह संगोष्ठी आयोजित की गई। कार्यक्रम के आरंभ में सिफरी के निदेशक, डॉ बि के दास ने सभी प्रतिनिधियों और विशेषज्ञों का स्वागत करते हुए पिछले पांच वर्षों से संस्थान की हिल्सा अनुसंधान गतिविधियों और पिछले दो वर्षों से राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) संबंधी गंगा नदी में हिल्सा पुनरुद्धार कार्यक्रम पर प्रकाश डाला। डॉ. दास ने कहा कि गंगा के ऊपरी क्षेत्र में हिल्सा पुनरुद्धार के लिए फरक्का बैराज में 55000 से अधिक हिल्सा मछलियों को छोड़ा गया है। हिलसा मछली के अभिगमन पथ के अध्ययन के लिए 2200 से अधिक वयस्क हिल्सा मछलियों को टैग कर के छोड़ा गया है। इस अध्ययन में पाया गया कि हिलसा 5 दिनों में 225 किमी की दूरी तय कर सकती है। इसके अलावा, सिफरी हिलसा के शुक्राणु संरक्षण और सफल प्रजनन की संभावना पर काम कर रहा है। डॉ. दास ने सुझाव दिया कि हिलसा पुनरुद्धार के प्रभावी निगरानी और सफलतम परिणाम के लिए सरकार द्वारा एक 10 वर्षीय योजना का आरंभ किया जाना चाहिए।

प्रो. अब्दुल वहाब, सलाहकार, (वर्ल्डफिश), बांग्लादेश ने बांग्लादेश में हिल्सा की वर्तमान स्थिति और अन्तर्स्थलीय जल में इसके संरक्षण नीति पर प्रकाश डालते हुए कहा कि बांग्लादेश का वर्तमान हिलसा उत्पादन 690000 मीट्रिक टन/वर्ष है। बांग्लादेश में हिलसा पकड़ने की प्रतिबंध अवधि हर वर्ष 22 दिन (अक्टूबर-नवंबर) है और न्यूनतम 500 ग्राम वाली हिलसा पकड़ने की अनुमति है। बांग्लादेश में हिल्सा उत्पादन में की हिलसा संरक्षण के प्रति जागरूकता की प्रमुख भूमिका है। डॉ. माइकल अकेस्टर, राष्ट्रीय निदेशक (वर्ल्डफिश), म्यांमार ने म्यांमार में हिल्सा मात्स्यिकी के प्रबंधन नीति पर प्रकाश डाला। डॉ. अकेस्टर ने बताया कि म्यांमार में 1.6 मिलियन हिल्सा पालकों में अधिकतर उद्यमी हैं और यहाँ हिल्सा की निषेचन अवधि अगस्त-सितंबर (विशेषकर सितंबर) में सबसे अधिक जबकि जनवरी-फरवरी और अप्रैल-मई में आंशिक तौर पर

होता है। डॉ. एटल मोर्टेंसन, कनकावा, नॉर्वे ने सुझाव दिया कि हिल्सा पालन के लिए मछली पालन संबंधी सूचनाएँ एक अच्छा विकल्प साबित होगी। डॉ. पी. कृष्णन, निदेशक बे ऑफ बंगाल प्रोजेक्ट (बीओबीपी), भारत ने हिलसा मात्स्यिकी प्रबंधन में बंगाल की खाड़ी परियोजना की भूमिका के बारे में बताया। डॉ. कृष्णन ने वैश्विक हिल्सा उत्पादन परिदृश्य और क्षेत्रीय दृष्टिकोण के लिए आवश्यक अनुसंधान गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित किया क्योंकि ये सभी देश बंगाल की खाड़ी से जुड़े हुए हैं। डॉ. बी.पी. मोहंती, सहायक महानिदेशक (अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी), भाकृअनुप, नई दिल्ली ने कहा कि हिलसा न केवल वसा और पयुफ़ा बल्कि प्रोटीन, घुलनशील विटामिन ए, डी, ई के और सूक्ष्म पोषक तत्वों से भी बहुत समृद्ध है। डॉ. मोहम्मद जलीलुर रहमान, वैज्ञानिक (इकोफिश II) वर्ल्डफिश, बांग्लादेश ने हिल्सा संरक्षण नीति के साथ बांग्लादेश में हिलसा प्रजनन की सफलता में सुधार के लिए हर साल 22 दिनों के ब्रूड हिलसा प्रतिबंध अवधि के सफल कार्यान्वयन पर प्रकाश डाला। सिद्धो कान्हो विश्वविद्यालय के प्राणी विज्ञान के प्रोफेसर आशिम कुमार नाथ ने सुझाव दिया कि अवैध पोना मछली पकड़ने पर पूर्ण प्रतिबंध, मछली पकड़ने पर प्रतिबंध अवधि प्रवर्तन, और हिलसा अभयारण्य की घोषणा भारतीय नदियों के लिए हिलसा संरक्षण की दिशायें कारगर साबित हो सकते हैं। डॉ. अर्नब बिस्वास, प्रबंध निदेशक, एलो आई हॉस्पिटल, कोलकाता ने हिल्सा के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक और पौराणिक महत्व को प्रस्तुत किया। डॉ. के. के. वास, संस्थान के पूर्व निदेशक ने संगोष्ठी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिलसा मत्स्य संरक्षण और प्रसार में क्षेत्रीय दृष्टिकोण का विशेष महत्व है। दिनांक 23 मार्च 2022 को आयोजित इस संगोष्ठी में विशेषज्ञों, विद्वानों और छात्रों सहित 70 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

इंडियन फिशरीज आउटलूक 2022 सम्मेलन के दौरान दिनांक 23 मार्च 2022 को देश के समस्त मात्स्यिकी महाविद्यालयों के संकाय अध्यक्षों की एक ऑनलाइन बैठक सत्र आयोजन

इंडियन फिशरीज आउटलूक 2022 सम्मेलन के दौरान दिनांक 23 मार्च 2022 को देश के समस्त मात्स्यिकी महाविद्यालयों के संकाय अध्यक्षों की एक ऑनलाइन बैठक सत्र आयोजित किया गया था। इस सत्र के अध्यक्ष डॉ. गोपाल कृष्ण, पूर्व निदेशक थे। सत्र के आरंभ में डॉ गोपाल कृष्ण ने छात्रों के बीच शिक्षा की गुणवत्ता और व्यावसायिकता को बढ़ाने सहित भारत में मत्स्य पालन शिक्षा को मजबूत करने पर जोर दिया। उन्होंने सिफरी के निदेशक, डॉ. बि. के. दास आयोजन टीम को इस बैठक के आयोजन के लिए धन्यवाद दिया।

इस बैठक में निम्नलिखित विचार-विमर्श किया गया।

कॉलेज की मूलभूत सुविधाओं और बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए राष्ट्रीय और राज्य स्तर से वित्तीय सहायता प्राप्त करना।

राष्ट्रीय स्तर की नियामक संस्था का गठन

मत्स्य पालन शिक्षा, न्यूनतम मूलभूत सुविधा, सभी महाविद्यालयों में संकाय की आवश्यकता तथा नये महाविद्यालय की स्थापना सुनिश्चित करना

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों के बीच पारस्परिक सहयोग जिससे मात्स्यिकी विज्ञान के स्नातक, स्नातकोत्तर एवं और पीएचडी के विदयार्थियों/ शोध छात्रों के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, अनुसंधान निष्कर्ष और प्रदर्शन में सुधार किया जा सके। संस्थानों के वैज्ञानिकों को मात्स्यिकी महाविद्यालयों के लिए प्राध्यापक हेतु विचार किया जा सकता है।

महाविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों में अनुसंधान कार्यक्रमों की पुनरावृत्ति को रोकने के लिए एक राष्ट्रीय स्तर का डेटाबेस का निर्माण ।

मत्स्य विभाग के अधिकारियों के लिए नियमित रूप से पुनश्चर्या पाठ्यक्रम और सभी राज्य में मत्स्य विभाग के प्रमुखों को राज्य मत्स्य विभाग का नेतृत्व करने के लिए रिफ्रेशर कोर्स की आवश्यकता

सभी कॉलेजों में अनुसंधान परिषदों का गठन (देश के लिए और स्थानीय जरूरतों पर भी आवश्यक शोध कार्य का मार्गदर्शन करने के लिए)

छात्रों के लिए सॉफ्ट स्किल की सुविधा को शामिल करना

नियमित रूप से बैठक आयोजित करने के लिए और सभी को व्हाट्सएप, मीटिंग और वर्चुअल प्लेटफॉर्म चर्चा आदि के माध्यम से लिंकेज को मजबूत करना चाहिए।

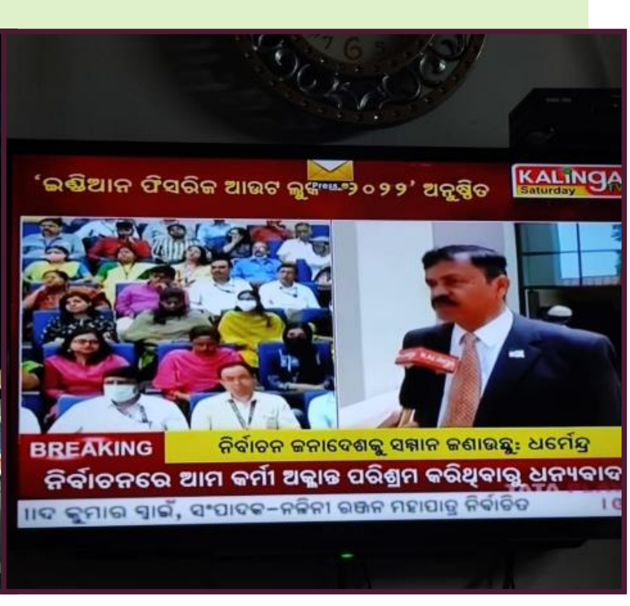

इंडियन फिशरीज आउटलुक 2022 के अनदेखे द्रश्य की झलकियाँ

भारत में पहली बार गंगा नदी में निषेचित किया गया हिल्सा के अंडे : नदी पारिस्थितिकी तंत्र में मछली प्रजातियों की बहाली की दिशा में आईसीएआर- सिफ़री द्वारा उठाया गया कदम

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफ़री), बैरकपुर ने पहली बार गंगा नदी के फरक्का बैराज के अपस्ट्रीम में 1,80,000 हिल्सा के अंडे को निषेचित किया, जिससे गंगा नदी में हिल्सा मत्स्य पालन बहाली की दिशा में एक नई दिशा मिल सके। हिल्सा गंगा-ब्रह्मपुत्र-मेगना (GBM) बेसिन की सबसे प्रसिद्ध प्रजाति है और ज्यादातर पश्चिम बंगाल और बंगदेश के लोगों द्वारा पसंद की जाती है। निरंतर मानवजनित दबावों के कारण, यह प्रजाति गंगा नदी में विशेष रूप से फरक्का, पश्चिम बंगाल से प्रयागराज, उत्तर प्रदेश के मध्य खंड से गायब होती जा रही है। गंगा नदी में मछली प्रजातियों की तत्काल बहाली के महत्व को महसूस करते हुए, आईसीएआर-सिफ़री, बैरकपुर ने स्वच्छ गंगा राष्ट्रीय मिशन (एनएमसीजी) के सहयोग से, वयस्क हिल्सा की खेती सहित यह कर्मकांड की शुरुवात की है। वर्ष 2020 से, चुने हुए खंड में 45000 से अधिक वयस्क हिल्सा को पहले ही निषेचित किया जा चुका है और जिसका परिणाम दिलचस्प हैं। निषेचित अंडों की रैंचिंग जर्मप्लाज्म संरक्षण और प्रजातियों की बहाली की दिशा में एक नया दृष्टिकोण माना जा रहा है। निषेचित हिल्सा अंडों की खेती न केवल प्रजातियों की बहाली की दिशा में भारत में पहली बार उठाया गया कदम है, बल्कि खुले पानी की नदियों में देशी जर्मप्लाज्म संरक्षण की दिशा में भी एक प्रयास है, जो सतत विकास लक्ष्य (SDG-14,15) यानी पानी के नीचे जीवन की दिशा में गतिविधियों का समर्थन करता है। हमारे लिए खोए हुए आवास को पुनर्स्थापित करना महत्वपूर्ण है, इसमें समय लगता है और कई हितधारकों की भागीदारी, प्रजातियों के विभिन्न जीवन चरणों में कृत्रिम प्रजनन और मत्स्यपालन, नदियों की तरह खुले पानी में खोई हुई प्रजातियों की बहाली की सुविधा प्रदान करना जरूरी हैं। मछली को निषेचित करने से पहले, फरक्का के ऊपर गंगा नदी में उचित स्थान का चयन किया गया था ताकि उच्च जल प्रवाह, अधिक गहराई और मानव हस्तक्षेप से बचा जा सके। इस प्रक्रिया के दौरान, वयस्क हिल्सा नर और मादा को ड्राई स्ट्रिपिंग विधि के माध्यम से प्रजनित किया गया था। निषेचन दर 85-90% थी। निषेचित अंडों को ऑक्सीजन की सहायता से पैक किया गया और चयनित स्थल पर पहुँचाया गया। पानी के तापमान में वृद्धि से बचने के लिए सुबह या शाम के समय का ही चयन किया गया। संपूर्ण कार्य संस्थान के निदेशक डॉ. बि .के.दास एवं एनएमसीजी परियोजना टीम के सदस्यों के मार्गदर्शन में किया गया ।

मेघालय के मध्यम क्षेत्र में सिफ़री केजग्रो (CIFRI-CAGEGROW) फ्लोटिंग फीड का प्रदर्शन और वितरण

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने सिफ़री-केजग्रो का विकास और व्यावसायीकरण किया, जो खुले पानी में केज और पेन में मछली पालन करने वाले मछली किसानों / मछुआरों के किए लाभदायक हैं । मेघालय के मध्यम ऊंचाई क्षेत्र में आदिवासी मछली किसानों के बीच फ़ीड को लोकप्रिय बनाने के लिए, संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने 01.03.2022 को उमसिंग, री-भोई जिले, मेघालय में एक "जागरूकता-सह-फ़ीड वितरण कार्यक्रम" का आयोजन किया। यह कार्यक्रम मेघालय मत्स्य पालन विभाग और री-भोई किसान संघ के सहयोग से आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास और डॉ. बी. के. भट्टाचार्य, प्रमुख (कार्यवाहक), क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी के समग्र मार्गदर्शन में किया गया था। इसका आयोजन श्री ए.के. यादव और डॉ. प्रणब दास, वैज्ञानिक (संगठन सचिव); डॉ. एस. येंगकोकपम (वरिष्ठ वैज्ञानिक), डॉ. डी.के. मीना और डॉ. एस. बोराह, वैज्ञानिक (सह-संगठन सचिव) द्वारा किया गया। श्री एफ. हसबर, मत्स्य अधिकारी, री-भोई जिले और री-भोई जिले के एक अन्य मत्स्य अधिकारी ने कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम में री-भोई किसान संघ के तहत इलाके के 60 आदिवासी मछली किसानों ने भाग लिया, जिसका नेतृत्व श्री डी. माजॉ, अध्यक्ष और श्री के. ब्राइटस्टार, सचिव ने किया। इस कार्यक्रम में स्थानीय मीडिया के प्रतिनिधि भी मौजूद थे।

श्री डी. मजाव ने दिन भर चलने वाले इस कार्यक्रम के बारे में बताया और प्रतिभागियों और गणमान्य व्यक्तियों का स्वागत किया। डॉ. बी. के. भट्टाचार्य ने उद्घाटन भाषण दिया और इस कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि संस्थान ने खुले पानी के लिए सिफ़री-जीआई केज, सिफ़री-एचडीपीई पेन और सिफ़री -केजग्रो फ्लोटिंग फीड का व्यवसायीकरण किया है। उन्होंने पूर्वोत्तर क्षेत्र विशेषकर मेघालय के खुले पानी में मत्स्य पालन के विकास के लिए संस्थान द्वारा की जा रही विभिन्न गतिविधियों के बारे में बताया। डॉ. प्रोनोब दास ने सिफ़री-कैजग्रो फीड के उपयोग और वैज्ञानिक गुणों के साथ-साथ मछली पालन में मछली फ़ीड की भूमिका और विभिन्न फीडिंग विधियों के बारे में बताया। श्री ए.के. यादव ने प्रतिभागियों को सिफ़री -केजग्रो फीड के लाभ और खुले पानी में मत्स्य पालन के लिए विकसित अन्य प्रौद्योगिकियों के बारे में बताया। श्री एफ. हसबर ने उमियाम जलाशय में केज की खेती सहित राज्य में मत्स्य पालन के विकास के लिए संस्थान को उनके द्वारा किए गए प्रयासों के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने वैज्ञानिक मछली पालन के विभिन्न पहलुओं के बारे में भी बताया।

बातचीत के दौरान, प्रतिभागियों ने मत्स्य पालन और जलीय कृषि के विभिन्न पहलुओं पर वैज्ञानिकों से आलोचना की। डॉ. भट्टाचार्य ने प्रतिभागियों से उच्च उत्पादन, आय वृद्धि और आजीविका के लिए वैज्ञानिक मछली पालन विधियों को अपनाने का आग्रह किया। उन्होंने लाभार्थियों से सिफ़री केजग्रो (CIFRI-CAGEGROW) फ़ीड के प्रदर्शन पर प्रतिक्रिया साँझा करने का भी आग्रह किया। इस अवसर पर जिले के 30 आदिवासी मछुआरा परिवारों को कुल 2000 किलो सिफ्री-केजग्रो फ्लोटिंग फीड वितरित किया गया। श्री के. ब्राइटस्टार ने री-भोई किसान संघ के मछुआरों की तरफ से संस्थान को उनके निरंतर समर्थन के लिए धन्यवाद दिया और वितरित किए गए फ़ीड के सफलतापूर्वक उपयोग की निगरानी करने का वादा किया।

छत्तीसगढ़ के आदिवासी मत्स्य कृषकों की भागीदारी से जलाशय मत्स्य उत्पादन में वृद्धि : सिफ़री की नई पहल

भारत सरकार के अनुसूचित जनजाति घटक के तहत भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान(सिफ़री) ने आदिवासी समुदाय द्वारा परिचालित और प्रबंधित, 10 जलाशयों में जलाशय के सहकारी समिति और छत्तीसगढ़ मत्स्य पालन विभाग की सहयोगिता से एक उत्पादन वृद्धि कार्यक्रम की शुरूवात की। संस्थान के निदेशक डॉ. बि .के. दास के नेतृत्व में यह निर्णय लिया गया कि जलाशय में पेनकल्चर के लिए 2 टन पेन, इंजन के साथ नाव और 2 टन मछली का चारा मछली के बीज के पालन के लिए उपलब्ध कराया जाएगा । कोविड महामारी की स्थिति और प्रक्रिया को गति देने के लिए एक ऑनलाइन बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में छत्तीसगढ़ मत्स्य पालन विभाग के निदेशक श्री एन.एस. नाग; राज्य मत्स्य विभाग के बारह अधिकारी (एडीएफ, मत्स्य पालन); और छत्तीसगढ़ की दस प्राथमिक मछुआरा सहकारी समितियों (पीएफसीएस) के सदस्य शामिल थे। डॉ. बि. के. दास ने प्रतिभागियों को बधाई दी और छत्तीसगढ़ के अन्तर्स्थलीय खुले पानी की मछली उत्पादन स्तर और उत्पादकता में सुधार के लिए पेन कल्चर के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने टिप्पणी की कि छत्तीसगढ़ के 10 विभिन्न जलाशयों में पहली बार सिफ़री के हस्तक्षेप से बीस मॉडल पेन प्रदर्शन किए जाएंगे। झारखंड में भी सिफ़री द्वारा इसी तरह के हस्तक्षेप किए गए जिससे वहाँ के जलाशय उत्पादकता स्तर में वृद्धि हुई है। सिफ़री के निदेशक डॉ. बि. के दास और छत्तीसगढ़ के मत्स्य पालन निदेशक श्री एन.एस. नाग, दोनों ही इस बात पर सहमत हुए कि राज्य में स्थापित होने वाले पेन कल्चर की नियोजित गतिविधियों में प्राथमिक मछुआरा सहकारी समितियों (पीएफसीएस) के सदस्यों की बड़ी भूमिका है। पेन कल्चर तकनीक की स्थापना से इन जलाशयों में अतिरिक्त 200 टन मछली उत्पादन की आशा हैं। यह अनुमान किया जा रहा है कि अंगुलिकायों को पेन में प्रतिपालित किया जा सकेगा और नाबार्ड और दूसरे बैंकों से आर्थिक सहायता प्राप्त करते हुए अन्तर्स्थलीय मछुआरों की स्थिति में सुधार आएगा और यह एक मॉडल के रूप में स्थापित होगा । इससे परिवहन के करण मृत्यु दर और वांछित अंगुलिकायों की अनुपलब्धता कम हो जाएगी जो उत्पादन बढ़ाने में एक प्रमुख बाधा रही है। *पुंटियस सराना* मॉडल को भारतीय प्रमुख कार्प (आईएमसी) के साथ स्टॉकिंग किया जा सकता है, क्योंकि यह एक ऑटो ब्रीडर है और इससे एक सिस्टम स्थापित किया जा सकता है। डॉ. दास ने प्राथमिक मछुआरा सहकारी समितियों (पीएफसीएस) के सदस्यों को सलाह दी कि वे अपने उद्यम को एक रिवॉल्विंग फंड के साथ शुरू करें जिससे वे अपनी वित्तीय गतिविधियों को अपने दम पर बनाए रख सकें। छत्तीसगढ़ मत्स्य पालन विभाग के निदेशक श्री एन.एस. नाग ने बैठक में बताया कि वे अन्तर्स्थलीय खुले जल निकायों में पेन लगाने के लिए तैयार हैं और इस नियोजित गतिविधियों में सिफ़री को रसद सहायता प्रदान करने के लिए भी तैयार हैं। प्राथमिक मछुआरा सहकारी समितियों (पीएफसीएस) के सदस्यों, राज्य विभाग के एडीएफ और सिफ़री के वैज्ञानिकों के बीच पेन कल्चर प्रबंधन प्रथाओं के बारे में बातचीत हुई, जिनका छत्तीसगढ़ में पालन किया जाएगा। बैठक में सिफ़री की ओर से डॉ. ए. के. दास, डॉ. अपर्णा रॉय, डॉ. पी. के परिदा, डॉ. लियामथुमलुआइया, डॉ. सतीश कौशलेश, डॉ. पियासी देबरॉय सहित वैज्ञानिकों की एक टीम उपस्थित थी।

सिफ़री में मनाया गया अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

आईसीएआर-सिफ़री ने 8 मार्च, 2022 को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर, इस वर्ष के थीम को ध्यान में रखते हुए "एक सुनहरे भविष्य के लिए लैंगिक समानता: अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन के विशेष संदर्भ में " विषय पर हाइब्रिड मोड पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया।

इस कार्यक्रम के संयोजक तथा संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने स्वागत भाषण से कार्यक्रम की शुरुवात हुई । उन्होंने स्वयं संस्थान में लैंगिक समानता के परिदृश्य का उल्लेख किया और अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी क्षेत्र में संस्थान में कार्यरत महिला पेशेवरों की भूमिका के बारे में जानकारी दी। उन्होंने अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन में विशेष रूप से एसआईएफ के कलेक्टर के रूप में मछुआरा महिलाओं की भूमिका और पोषण सुरक्षा प्रदान करने में इनकी भूमिका पर प्रकाश डाला और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को मत्स्य पालन में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने महिलाओं के सशक्तिकरण में सिफ़री की भूमिका के बारे में भी उल्लेख किया, जिसमें नहर

मत्स्य पालन या वर्षा आधारित तालाब में मछली पालन और स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से उनकी भागीदारी को सिफ़री द्वारा प्रोत्साहित किया गया था। कार्यक्रम की शोभा वर्द्धन करने के लिए मुख्य अतिथि के तौर पर भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था की अध्यक्ष डॉ. विजया लक्ष्मी सक्सेना ऑनलाइन में शामिल थी। उन्होंने साझा किया कि महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में बदलाव के बावजूद भी विभिन्न सामाजिक उत्पीड़न से वे आज भी प्रभावित होती हैं जो उन्हें समाज में समानता प्राप्त करने से रोकते हैं। उन्होंने विश्व आर्थिक मंच द्वारा "जेंडर गैप रिपोर्ट, 2021"

के संदर्भ में लिंग भेद और लिंग समानता प्राप्त करने में शिक्षा की भूमिका के संदर्भ में भारतीय महिलायों की स्थिति पर अपनी चिंता व्यक्त की। प्रो. भास्करम मणिमारन, पूर्व कुलपति, टीएन डॉ. जयललिता मत्स्य विश्वविद्यालय और अध्यक्ष, आरएसी भी कार्यक्रम में उपस्थित थे और

उनका मानना था कि महिलाओं को समाज के विकास को सुनिश्चित करने के लिए सशक्त बनाया जाना चाहिए और साथ ही उन्होनें महिला प्रकोष्ठ के संचालन के लिए सिफ़री की सराहना की। डॉ. एस. के जैन, आरएसी के सदस्य ने अपने भाषण की शुरुआत एक सुंदर वक्तव्य से किया -"पृथ्वी मुस्कुराती है जब महिलाएं मुस्कुराती हैं" जो वास्तव में एक ऐसे समाज की छवि हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं जिसमें अधिकारों के मामले में समानता है और सामाजिक रूप से न्यायपूर्ण भी । और यह लैंगिक समानता प्राप्त करने से ही हमारे देश को आर्थिक रूप से भी लाभ होगा। डॉ. (श्रीमती) लीला एडविन, निदेशक (कार्यवाहक) भाकृअनुप-केंद्रीय मत्स्य प्रौद्योगिकी संस्थान और प्रो. सुहिता चक्रवर्ती (दास), प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष, बिधान चंद्र कृषि विश्वविद्यालय सम्मानित अतिथि थे। डॉ. एडविन ने एक प्रस्तुति के माध्यम से बहुत ही समृद्ध व्याख्यान दिया जहां उन्होंने मत्स्य पालन और संबद्ध क्षेत्रों में महिलाओं की बेहतर भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न तकनीकों को शुरू करने में सीआईएफटी की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने महिलाओं को सक्षम बनाने के लिए प्रशिक्षण और कौशल विकास की आवश्यकता का सुझाव दिया। सिफ़री की सहायक प्रशासनिक अधिकारी श्रीमती पौशाली मुखर्जी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम की संयोजक डॉ. अपर्णा राय, डॉ. सुमन कुमारी ने बहुत ही शालीनता से कार्यक्रम का संचालन किया। कुल 114 प्रतिभागियों ने ऑनलाइन तथा ऑफलाइन मोड में भाग लिया। लैंगिक समानता की प्रासंगिकता को उजागर करने के अपने उद्देश्य में कार्यक्रम सफल रहा और महिलाओं को अपने भविष्य को उज्ज्वल करने की प्रेरणा भी दी।

संस्थान में 08-09 मार्च, 2022 के दौरान अनुसंधान सलाहकार समिति (आरएसी) की बैठक आयोजित

संस्थान की तीसरी अनुसंधान सलाहकार समिति (आरएसी: 2020-2022) की बैठक हाइब्रिड मोड के माध्यम से 08-09 मार्च, 2022 के दौरान आयोजित की गई थी। आरएसी के माननीय अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) भास्करन मणिमारन और आरएसी के सम्मानित सदस्य डॉ. शरद कुमार जैन और डॉ. बी.पी. मोहंती ने बैठक में प्रत्यक्ष रूप से शामिल हुए जबकि डॉ. के.जी. पद्मकुमार, और डॉ. एस.सी. पाठक ने ऑनलाइन मोड के माध्यम से बैठक में भाग लिया। डॉ. ए.के. दास, सदस्य सचिव ने आरएसी के अध्यक्ष और सदस्यों के औपचारिक स्वागत के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की। स्वागत भाषण के बाद संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने प्रारंभिक टिप्पणी की। डॉ. दास ने कोविड महामारी की स्थिति के बीच नई अनुसंधान पहलों, अनुसंधान उपलब्धियों, आउटरीच कार्यक्रमों, विकसित प्रौद्योगिकियों और उत्पादों, उच्च प्रभाव वाले प्रकाशनों और बुनियादी ढांचे के विकास पर प्रकाश डालते हुए संस्थान की विभिन्न अनुसंधान गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने यह भी बताया कि संस्थान को बड़े संस्थान श्रेणी के तहत सरदार पटेल उत्कृष्ट आईसीएआर संस्थान पुरस्कार-2020 से सम्मानित किया गया और निदेशक महोदय को कृषि विज्ञान में उत्कृष्ट अनुसंधान के लिए प्रसिद्ध रफी अहमद किदवई पुरस्कार मिला। अध्यक्ष, प्रो मणिमारन ने अपनी प्रारंभिक टिप्पणियों में संस्थान की उपलब्धियों की अत्यधिक सराहना की और आरएसी के अध्यक्ष के रूप में देश के इस प्रमुख अनुसंधान संस्थान से जुड़े होने पर सम्मानित महसूस किया। उन्होंने संस्थान के वैज्ञानिकों से उत्पादन बढ़ाने के लिए अन्तर्स्थलीय मत्स्य पालन पर ध्यान केंद्रित करने और उभरती चुनौतियों के संदर्भ में अनुसंधान गतिविधियों को प्राथमिकता देने के

संदर्भ में तकनीकी मार्गदर्शन और प्रबंधन योजना प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का आग्रह किया। उन्होंने पुरस्कार के लिए निदेशक और कर्मचारियों को बधाई दी। डॉ. एस. के. जैन ने संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा प्रकाशित उच्च प्रभाव वाले प्रकाशनों सहित उपलब्धियों की सराहना की। डॉ. पद्मकुमार ने देश में अन्तर्स्थलीय मछली उत्पादन में वृद्धि को बढ़ावा देने में संस्थान के योगदान पर जोर दिया और खुले जल मत्स्य पालन के विभिन्न मुद्दों और चुनौतियों पर प्रकाश डाला। डॉ. पाठक ने संस्थान के साथ अपने लंबे जुड़ाव को याद किया और कहा कि संस्थान ने अपने अनुसंधान कार्यक्रमों का विस्तार किया है और क्षेत्रीय विकास के लिए अत्यधिक योगदान दिया है। डॉ. बी.पी. मोहंती ने संस्थान में अपने लंबे करियर को याद किया और वैज्ञानिकों से विजन 2047 की राष्ट्रीय आकांक्षाओं के लिए और अधिक योगदान करने का आग्रह किया। आरएसी के अध्यक्ष और सदस्यों द्वारा प्रारंभिक टिप्पणियों के बाद सदस्य सचिव द्वारा कार्रवाई रिपोर्ट प्रस्तुत की गई। समिति ने टिप्पणी की कि एटीआर बहुत शीघ्र ही तैयार किया गया था और सभी सिफारिशों को ध्यान में रखा गया था। विभागाध्यक्ष, क्षेत्रीय केंद्रों के प्रमुखों/प्रभारी ने विभिन्न संस्थान परियोजनाओं और अन्य गतिविधियों के तहत प्राप्त उपलब्धियों को प्रस्तुत किया। दो आईसीएआर नेटवर्क परियोजनाओं की उपलब्धियां भी संबंधित प्रधान अन्वेषकों द्वारा प्रस्तुत की गईं। अध्यक्ष प्रो. मणिमारन और अन्य सदस्यों ने समग्र प्रगति पर संतोष व्यक्त किया और संस्थान द्वारा की गई विभिन्न पहल की भी सराहना की। उन्होंने प्लेटिनम जुबली के अवसर पर संस्थान के निदेशक और कर्मचारियों को बधाई दी। अंत में, अध्यक्ष और सदस्यों ने अनुसंधान गतिविधियों की आलोचनात्मक समीक्षा और सुझावों के साथ अपनी समापन टिप्पणी की और आरएसी की सिफारिशें कीं। निदेशक डॉ. दास ने अध्यक्ष और आरएसी के सभी सदस्यों को उनके बहुमूल्य सुझावों और टिप्पणियों के लिए धन्यवाद दिया जो संस्थान को अपने अनुसंधान कार्यक्रमों को सही आकार देने और प्राथमिकता देने के साथ ही नई ऊंचाइयों और राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करेंगे। बैठक आरएसी सदस्य सचिव द्वारा औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन के साथ समाप्त हुई।

प्लेटिनम जुबली व्याख्यान श्रृंखला #4

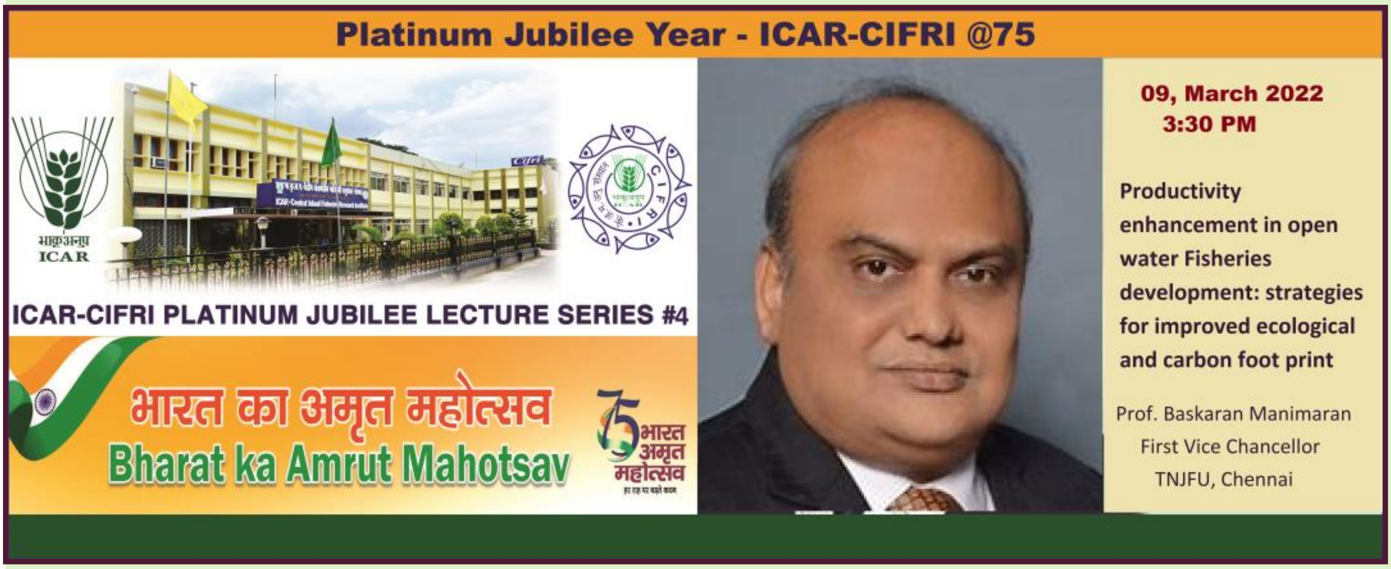

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर अपनी यात्रापथ के 75वें वर्ष में है। यह भारतीय स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ भी है, जिस करण 'भारत की आजादी का अमृत महोत्सव' भी मनाया जा रहा है। इस संबंध में, आईसीएआर सहित सभी विभाग और मंत्रालय विकास के विभिन्न क्षेत्रों के पिछले 74 वर्षों की उपलब्धियों का जश्न मनाने के लिए निर्धारित कार्यक्रमों की श्रृंखला की मेजबानी कर रहे हैं। इस पृष्ठभूमि में, संस्थान भी प्लेटिनम जुबली व्याख्यान श्रृंखला का आयोजन कर रहा है। 9 मार्च 2022 को, संस्थान ने प्रो. भास्करन मणिमारन, तमिलनाडु डॉ. जे जयललिता फिशरीज यूनिवर्सिटी, नागापट्टिनम के पूर्व कुलपति द्वारा ऑनलाइन और ऑफलाइन दोनों तरह से हाइब्रिड मोड में श्रृंखला के चौथे व्याख्यान का आयोजन किया। प्रो. भास्करन मणिमारन राज्य वित्त पोषित मत्स्य विश्वविद्यालय के एक वास्तुकार हैं। एसएयू पैटर्न और पाठ्यक्रम का पालन करके मछली उत्पादन और इसके उपयोग को बढ़ाने के लिए व्यावसायिक शिक्षा अनुसंधान और प्रशिक्षण प्रदान करने वाला आपने आप में यह एक बेमिशाल विश्वविद्यालय है। वे तटीय जलकृषि प्राधिकरण के तकनीकी निदेशक भी थे। वर्तमान में वह एक अंतरराष्ट्रीय जलीय कृषि सलाहकार हैं जो जलीय कृषि और मत्स्य पालन में स्वच्छता को बढ़ावा देते हैं। उन्होंने 'खुले पानी में मत्स्य पालन विकास में उत्पादकता वृद्धि: बेहतर पारिस्थितिक और कार्बन फुट प्रिंट के लिए रणनीतियाँ' पर अपना व्याख्यान दिया। व्याख्यान से सभी समृद्ध हुए और एक विचार-विमर्श सत्र भी आयोजित किया गया था। व्याख्यान सत्र में 146 से अधिक व्यक्तियों ने ऑनलाइन तथा ऑफ लाइन मोड में भाग लिया।

जलीय कृषि में विविधीकरण पर राष्ट्रीय अभियान

भारत की आजादी के 75 वर्ष की खुशी को मनाने के लिए, आईसीएआर-सीएमएफआरआई ने सीआईएफआरआई, सीआईएफई, सीआईएफटी, सीआईएफए, सीआईबीए, एनबीएफजीआर और डीसीएफआर के साथ संयुक्त रूप से 10 मार्च 2022 को 10:30 - 1 बजे एक्काकल्चर में विविधीकरण पर राष्ट्रीय अभियान के रूप में एक वेबिनार का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत सीएमएफआरआई के निदेशक डॉ. गोपाल कृष्ण के स्वागत भाषण से हुई। राष्ट्रीय अभियान के अवसर पर तीन व्याख्यानों की एक श्रृंखला का आयोजन हुआ, जो दुनिया भर में प्रसिद्ध शोधकर्तायों द्वारा दी गई । पहला व्याख्यान डॉ. कृष्णा आर. सालिन, अध्यक्ष, जलीय कृषि और जलीय संसाधन प्रबंधन कार्यक्रम (एएआरएम), पर्यावरण, संसाधन और विकास संस्था (एसईआरडी), एशियाई प्रौद्योगिकी संस्थान (एआईटी), क्लोंग लुआंग, पथुमथानी, थाईलैंड द्वारा "एक्काकल्चर सिस्टम विविधीकरण: एशिया से सफल उदाहरण" पर दिया गया। दूसरा व्याख्यान प्रो. (डॉ.) रेने एच. विजफेल्स, प्रोफेसर, एग्रोटेक्नोलॉजी और खाद्य विज्ञान विभाग, वैगनिंगन यूनिवर्सिटी, नीदरलैंड द्वारा "टूवर्ड्स इंडस्ट्रियल माइक्रोएल्गे प्रोडक्शन फॉर फूड एंड फीड एप्लीकेशन" पर था और तीसरा डॉ. जॉर्ज डायस, सह-संस्थापक और सीईओ और प्रोडक्शन मैनेजर, स्पारोस एलडीए, पुर्तगाल द्वारा "एक्काफीड्स में माइक्रोएल्गे की क्षमता को बढ़ाने" विषय पर था। संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास के नेतृत्व में संस्थान मुख्यालय के 38 वैज्ञानिक ,पांच तकनीकी अधिकारी और 11 शोधार्थियों ने बैठक कक्ष से वेबिनार में भाग लिया। वहीं, मुख्यालय के 13 वैज्ञानिक ऑनलाइन वेबिनार में शामिल हुए। आरआरसी गुवाहाटी से 12 कर्मचारी, आरआरसी, बैंगलोर केंद्र से 6 कर्मचारी, आरआरसी प्रयागराज से 7 कर्मचारी; आरआरसी वडोदरा से तीन, कोलकाता से दो और कोच्चि केंद्र से तीन ने वेबिनार में भाग लिया। निदेशक, सीएमएफआरआई ने वेबिनार को सफलतापूर्वक आयोजित करने में सहयोग के लिए संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के दास को धन्यवाद दिया।

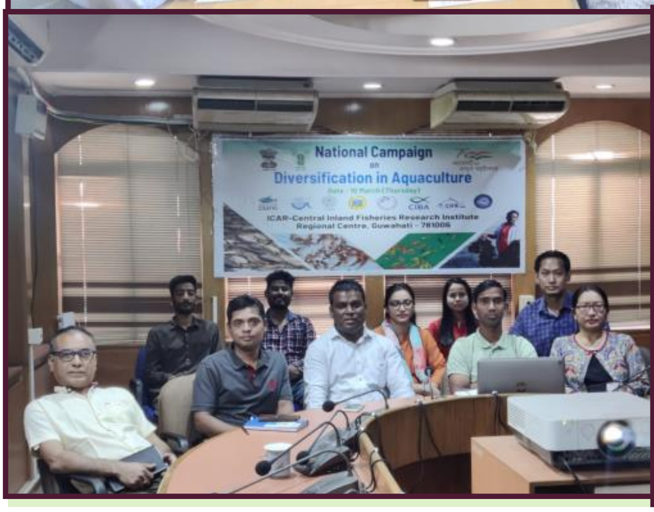

भाकृअनुप- केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान द्वारा मणिपुर की लोकतक झील में ओस्टियोब्रामा बेलंगेरी की मेगा रैंचिंग कार्यक्रम की शुरुवात

ओस्टियोब्रामा बेलंगेरी (स्थानीय रूप से जिसे पेंगबा कहा जाता है) उत्तर पूर्व भारत के मणिपुर, म्यांमार और चीन के युनान प्रांतों की एक संकटग्रस्त कार्प है। मणिपुर राज्य में इसके महत्व और उच्च उपभोक्ता वरीयता के कारण इसे 'राज्य मछली' के रूप में नामित किया गया है। अतीत में लोकतक झील में यह काफी संख्या में उपलब्ध था, जो राज्य की लगभग 40% प्राकृतिक मत्स्य पालन में योगदान देता था। हालांकि, पिछले कुछ दशकों में मणिपुर में इसकी संख्या में काफी गिरावट आई है और आईयूसीएन रेड लिस्ट के अनुसार इसे ' खुले में विलुप्तप्राय' घोषित किया गया है। 90 के दशक में मछली के प्रेरित प्रजनन की सफलता और बाद में झील में विभिन्न संगठनों द्वारा किए गए मछलीपालन के कारण पेंगबा झील में कभी-कभी दिखाई देने लगे। पेंगबा के घटते स्टॉक को फिर से ज्यादा करने के उद्देश्य से, आईसीएआर-सिफ़री ने प्राकृतिक स्टॉक को बढ़ाने के लिए लोकतक झील में ऑस्टियोब्रामा बेलंगेरी (पेंगबा) के 1 लाख उन्नत अंगुलिमीन (>10 सेमी आकार) को छोड़ने का एक मेगा रैंचिंग कार्यक्रम की शुरुवात की। मत्स्य पालन कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए, मणिपुर के मत्स्य निदेशालय के सहयोग से 15 मार्च 2022 को सेंद्रा द्वीप के पास लोकतक झील में कुल 20,000 पेंगबा अंगुलिमीन को छोड़ा गया। दूसरे दिन लोकतक झील में

करंग द्वीप के पास कुल 10,000 पेंगबा अंगुलिमीन को छोड़ा गया । कार्यक्रम संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास के कुशल मार्गदर्शन में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. एच. बालकृष्ण, एमसीएस, मणिपुर के मत्स्य पालन निदेशक थे। कार्यक्रम का नेतृत्व डॉ. बी. के. भट्टाचार्य, संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी के प्रभारी ने किया और संस्थान से डॉ. सोना येंगकोकपम, वरिष्ठ वैज्ञानिक; डॉ. एस. सी. एस. दास, वैज्ञानिक; डॉ. एन. एस. सिंह, वैज्ञानिक; सुश्री टी. निरुपदा चानू, वैज्ञानिक शामिल हुए और श्री दिनेश्वर, डीएफओ बिष्णुपुर जिला; श्री हेमचंद्र सिंह, एफओ और श्री राजीव, एफआई, डीओएफ, मणिपुर भी कार्यक्रम में उपस्थित थे। कार्यक्रम में लगभग 130 मछुआरों और अन्य हितधारकों ने भाग लिया। आलोचना सत्र के दौरान, श्री बालकृष्ण सिंह, मत्स्य निदेशालय के निदेशक ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया और मछुआरों को स्टॉक किए गए पेंगबा अंगुलिमीन को न पकड़ने की सलाह दी ताकि मछलियों को झील में बढ़ने का मौका मिल सके। उन्होंने मछुआरों और अन्य हितधारकों से भी अपील कि की अगर गलती से यह मछली उनके पकड़ में आता हैं तो तुरंत पेंगबा मछली को छोड़ दिया जाय। डॉ. सोना येंगकोकपम ने मछुआरों को लोकतक झील के पारिस्थितिकी तंत्र में पेंगबा मछली के महत्व के बारे में बताया। झील में पेंगबा पालन के प्रभाव और स्थानिक राज्य मछली और अन्य देशी मछलियों के अन्य विभिन्न संरक्षण उपायों को सुश्री टी.एन. चानू द्वारा मछुआरों और हितधारकों को संक्षेप में समझाया गया। डॉ. एस.सी.एस. दास ने पेंगबा के जीव विज्ञान और झील में मछली पकड़ते समय सावधानी के बारे में बताया। पेंगबा के जीवित रहने के लिए आवश्यक अनुकूल वातावरण और बेहतर विकास पर डॉ. एन.एस. सिंह ने संक्षेप में चर्चा की। मछुआरों के एक प्रतिनिधि श्री सनायिमा ने इस तरह के कार्यक्रम आयोजित करने के लिए आईसीएआर-सिफ़री का आभार व्यक्त किया और झील में पेंगबा के संरक्षण के लिए मौजूदा दिशानिर्देशों का पालन करने के लिए सहमती व्यक्त की।

सिफरी ने दिनांक 17 मार्च 2022 को 76वां स्थापना दिवस मनाया

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी) अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी क्षेत्र में देश के प्रमुख अनुसंधान संस्थानों में से एक है, जिसकी स्थापना भारत सरकार द्वारा 17 मार्च 1947 को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीनस्थ की गई थी। सिफरी ने संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर, कोलकाता में दिनांक 17 मार्च 2022 को अपना 76वां स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक, डॉ बि के दास ने उपस्थित समस्त पदाधिकारियों और संस्थान कर्मियों का स्वागत किया तथा कहा कि संस्थान ने अपने अनुसंधान और प्रौद्योगिकी विकास के माध्यम से भारत में मत्स्य पालन और जलीय कृषि क्रांति की शुरुआत करने में अग्रणी भूमिका निभाई है जिससे देश को मछली के उत्पादन में 12 गुना की वृद्धि हुई है। संस्थान ने प्रेरित प्रजनन और मछली बीज उत्पादन पर तकनीक और प्रौद्योगिकियों को विकसित किया हैं, जैसे मिश्रित मत्स्य पालन; नदियों में मछली बीज संवर्धन और स्पॉन संग्रह; जलाशय और बाढकृत मैदानी झीलों में मात्स्यिकी प्रबंधन, मछलियों के मत्स्य बीजों को उनके मूलस्थान पर उत्पादन तथा पिंजरों और पेनक्षेत्र में बड़ी मछलियों का उत्पादन। अपने स्थापना के 76 वर्षों में, संस्थान ने अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन के सतत प्रबंधन के लिए उपयोगी दिशानिर्देश भी विकसित किए हैं। संस्थान ने 150 से अधिक खाद्य मत्स्य प्रजातियों में उपस्थित पोषण गुणों पर प्रोफाइल तैयार किया है। निदेशक महोदय ने उन सभी संस्थान कर्मियों, प्रगतिशील मछली किसानों, उद्यमियों, मत्स्य उद्योग को बधाई दी, जो संस्थान के विकास यात्रा से जुड़े रहे हैं। उन्होंने सिफरी को सरदार पटेल सर्वश्रेष्ठ आईसीएआर संस्थान पुरस्कार से सम्मानित होने पर भी सभी को बधाई दी।

इस अवसर पर भारत सेवाश्रम संघ के सहायक सचिव, स्वामी महादेवानंद महाराज जी ने सभी को बांग्ला भाषा में संबोधित किया और कोरोना महामारी की कठिन अवधि के दौरान संस्थान के कार्यों की सराहना की। स्वामी जी ने कहा कि उन्होंने पिछले कई वर्षों से व्यक्तिगत रूप से सुंदरबन क्षेत्र के मत्स्य

पालन विकास में संस्थान के योगदान को देखा है। उन्होंने एकीकृत मत्स्य पालन प्रौद्योगिकी के महत्व पर जोर दिया और इसके लिए सभी संस्थानों के बीच अधिक सहयोगात्मक कार्य की अपेक्षा की। उन्होंने स्वामी विवेकानंद जी के भाषण को उद्धृत करते हुए नवाचार और आविष्कार आम लोगों के हर दरवाजे तक पहुंचाने पर जोर दिया।

श्री राजीव कुमार, विशिष्ट अतिथि और महाप्रबंधक, धातु और इस्पात कारखाना, रक्षा मंत्रालय ने अपने संबोधन में पश्चिम बंगाल और अन्य राज्यों में संस्थान के काम की सराहना की। उन्होंने कहा कि संस्थान द्वारा विकसित तकनीक ने मत्स्य पालन और जलीय कृषि में क्रांति ला दी है।

डॉ. ए. पी. शर्मा, संस्थान के पूर्व निदेशक ने स्थापना दिवस के अवसर पर सिफरी परिवार को बधाई दी और कहा कि इस संथान की स्थापना तब की गई थी जब भारत खाद्य क्षेत्र में आत्मनिर्भर नहीं था। संस्थान स्वतंत्रता के बाद से राष्ट्र की सेवा कर रहा है और भारत में जलीय कृषि और अन्तर्स्थलीय माल्स्यिकी क्रांति में महत्वपूर्ण योगदान है। संस्थान की एक महत्वपूर्ण भूमिका पिंजरों में मछली उत्पादन करना है और अब समय आ गया है कि अधिक से अधिक मत्स्य प्रजातियों को पिंजरे में पालन किया जाए।

प्रो. एस. के. सान्याल, पूर्व कुलपति, बिधान चंद्र कृषि विश्वविद्यालय, कल्याणी ने राष्ट्र की सेवा के लिए सिफरी को बधाई दी और कहा कि

सर्वश्रेष्ठ संस्थान पुरस्कार, रफी अहमद किदवई पुरस्कार, पेटेंट, प्रौद्योगिकी आदि के रूप में संस्थान को ख्याति दिलाने के लिए संस्थान कर्मियों के प्रयास प्रशंसनीय हैं। कोविड महामारी से प्रभावित इस कठिन दौर में भी संस्थान ने उत्कृष्ट उपलब्धियां हासिल की हैं। उन्होंने नमामि गंगे परियोजना के तहत संस्थान द्वारा उठाए गए गंगा नदी में मत्स्य प्रजातियों का पुनरुद्धार और संरक्षण गतिविधियों की भी सराहना की।

डॉ. गौरांग कर, निदेशक, भाकृअनुप-केन्द्रीय पटसन और समवर्गीय रेशा अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने महामारी के पिछले दो वर्षों के दौरान संस्थान की विकासात्मक गतिविधियों की सराहना की। उन्होंने जल की घटती उपलब्धता जैसे गंभीर मुद्दों पर बात की और प्रति इकाई जल उत्पादकता बढ़ाने और कृषि गतिविधियों में जल की घटती उपलब्धता पर जोर दिया। उन्होंने स्वच्छ गंगा कार्यक्रम के तहत संस्थान को बधाई दी।

इस अवसर पर संथान में आयोजित वार्षिक खेल प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पदक मुख्य अतिथि और सम्मानित अतिथियों द्वारा प्रदान किए गए तथा संस्थान कर्मियों को चिकित्सा कार्ड वितरित किए गए। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ।

सिफरी के 76वें स्थापना दिवस पर गंगा नदी में तीस हजार मछली को छोड़ा गया

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् -केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), प्रयागराज के 76वें स्थापना दिवस पर आज दिनांक 17 मार्च 2022 को, पवित्र पावन गंगा और यमुना के संगम तट पर गंगा नदी में विलुप्त हो रहे मत्स्य प्रजातियों के संरक्षण एवम् संवर्धन को ध्यान में रखते हुए गंगा नदी में 30000 (तीस हजार) भारतीय प्रमुख कार्प-कतला, रोहू, मृगल मछलियों के बीज को रैंचिंग कार्यक्रम के तहत छोड़ा गया।

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एन एम सी जी) के अन्तर्गत आयोजित इस कार्यक्रम में संस्थान के केन्द्राध्यक्ष डा० डी एन झा ने उपस्थित लोगों को नमामि गंगे परियोजना के बारे में जानकारी दी जिसके अन्तर्गत पूरे गंगा नदी में कम हो रहे महत्वपूर्ण मत्स्य प्रजातियों के बीज की रैंचिंग करना, साथ ही लोगो को गंगा के जैव विविधता और स्वच्छता के बारे में जागरूक करना है। संस्थान के वैज्ञानिक डा० अबसार आलम ने समारोह को सम्बोधित करते

हुए गंगा नदी में मछली और रैंचिंग के महत्व को बताया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डा० सुनन्दा चतुर्वेदी, प्राचार्य, हे० न० ब० राज० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नैनी, प्रयागराज, ने गंगा के महत्व को बताया और गंगा को स्वच्छ रखने एवम जैव विविधता को बचाने के लिए उपस्थित लोगों से आह्वान किया। सभा में उपस्थित डा० अवधेश कुमार झा, आचार्य, हे० न० ब० राज० स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नैनी, प्रयागराज, ने भी कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए कहा कि गंगा नदी मानव सभ्यता की जननी है, इस कारण इसका संरक्षण आवश्यक है। इस अवसर पर श्री राजेश शर्मा, संयोजक गंगा विचार मंच, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन, जल शक्ति मंत्रालय, भारत सरकार, ने मंत्रालय द्वारा गंगा सफाई के लिए किए कार्यो का उल्लेख किया तथा गंगा को साफ रखने के लिए शपथ दिलाया। श्री मानवेन्द्र सिंह, अध्यक्ष क्षत्रिय महासभा, संस्थान के वैज्ञानिक श्री श्रवण शर्मा, गंगा स्नान करने आये स्नानार्थियों और मछुआरों ने भी सभा में अपनी बातों को रखा और सभी ने गंगा के प्रति जागरूक होने के साथ ही गंगा को स्वच्छ रखने का संकल्प व्यक्त किया।

कार्यक्रम में महाविद्यालय के विद्यार्थीगण के साथ साथ आस-पास गाव के मत्स्य पालक, मत्स्य व्यवसायी तथा गंगा तट पर रहने वाले स्थानीय लागों ने भाग लिया। कार्यक्रम के अन्त में संस्थान के वैज्ञानिक डा० वेंकटेश ठाकुर ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए आस्वस्त किया कि समाज के भगीदारी से हम इस परियोजना के उद्देश्यों को पाने में सफलता प्राप्त करेंगे। कार्यक्रम में संस्थान के शोधार्थी डा० संदीप कुमार मिश्र, श्री शिवजनम वर्मा, श्री संदीप मिश्रा, श्री दुर्गेश वर्मा आदि ने भाग लिया और सभा को सम्बोधित किया।

दक्षिण सलमारा मनकाचार में 28-30 मार्च, 2022 के दौरान सजावटी मत्स्य पालन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

असम राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफ़री) के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी और मत्स्य पालन विभाग, एसएसएम जिला हत्सिंगमारी के सहयोग से दक्षिण सलमारा मनकाचर (एसएसएम) जिले के जिला प्रशासन की देखरेख में 'आजीविका सुधार और ग्रामीण विकास के लिए सजावटी मछली पालन' पर 28-30 मार्च, 2022 के दौरान एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में 10 स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) की 30 मछुआरा सदस्यों ने भाग लिया। सुश्री पल्लवी सरकार, आईएएस, उपायुक्त, एसएसएम जिला, डॉ. बि.के. दास, संस्थान के निदेशक, डॉ. बी.के. भट्टाचार्य, क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी के प्रमुख और सैयद मुफ्ती आलम, प्रभारी, जिला परियोजना प्रबंधक, असम राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन, एसएसएम जिला के सक्रिय नेतृत्व में प्रशिक्षण सफलतापूर्वक आयोजित किया गया था। प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए संसाधन व्यक्ति थे डॉ. दीपेश देबनाथ, वरिष्ठ वैज्ञानिक, डॉ. एस.सी.एस. दास, वैज्ञानिक, क्षेत्रीय केंद्र गुवाहाटी ; श्री पलाश पॉल, सजावटी मछली उद्यमी, बिलाशीपारा, धुबरी; श्री इब्राहिम अली खान, उप-मंडल मत्स्य विकास अधिकारी (एसडीएफडीओ), एसएसएम और श्री अब्दुस सलाम, एफडीओ, एसएसएम जिला। स्वयं सहायता समूह के मछुआरों को दक्षिण सालमारा मनकाचर में सजावटी मत्स्य पालन की संभावनाओं, सजावटी मूल्यों वाली मछलियों की किस्मों (विदेशी और स्वदेशी दोनों), सामान्य सजावटी मछलियों के प्रजनन और पालन, मछलियों की हैंडलिंग, पैकेजिंग और परिवहन, उनके रोगों और प्रबंधन के

बारे में सिखाया गया। उन्हें एक्वेरियम टैंक की स्थापना और मछली पालन के लिए आवश्यक विभिन्न सामानों के बारे में भी बताया गया। क्षेत्र में कम लागत वाली मछली का चारा तैयार करने का प्रदर्शन भी किया गया।

एसएसएम जिले में समग्र मत्स्य विकास के लिए विभिन्न गतिविधियों के संभावनाओं के संबंध में सिफ़री, एफडीओ, एसडीडीएफडीओ, डीपीएम -एएसआरएलएम के वैज्ञानिकों द्वारा उपायुक्त और एसएचजी सदस्यों के साथ विस्तृत चर्चा और योजना बनाई गई। डीसी, एसएसएम जिले ने असम और बांग्लादेश के पिछड़े सीमावर्ती क्षेत्रों में मछुआरों की आय बढ़ाने और आजीविका में सुधार के लक्ष्य के साथ जिले में सजावटी मत्स्य पालन को बढ़ावा देने सहित मत्स्य पालन से संबंधित गतिविधियों में अत्यधिक रुचि ली। प्रशिक्षण के प्रतिभागी सजावटी मत्स्य पालन के वैज्ञानिक पहलुओं के बारे में जानकर अभिभूत थे और उन्होंने जिले में समग्र मत्स्य विकास के लिए साथी एसएचजी सदस्यों को प्रशिक्षण के दौरान सीखे गए अपने ज्ञान और कौशल को दूसरों के साथ सांझा करने का वादा किया।

सिफरी में बिहार के शेखपुरा जिले के मछुआरों के लिए "अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन" पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

बिहार राज्य के शेखपुरा जिले के मछुआरों/ मत्स्य किसानों के लिए भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान (सिफरी) मुख्यालय, बैरकपुर में "अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन" पर एक सात दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 31 मार्च से 6 अप्रैल, 2022 के बीच किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन दिनांक 31 मार्च 2022 को संस्थान के निदेशक डॉ बि के दास द्वारा किया गया। इस प्रशिक्षण में शेखपुरा जिले के कुल 31 किसानों को प्रशिक्षित किया गया था। वर्ष 2016-17 से अबतक सिफरी ने शेखपुरा जिले के 142 किसानों को अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षित किया है। उद्घाटन सत्र में, निदेशक, डॉ. बि. के. दास ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। उन्होंने प्रशिक्षुओं के साथ विस्तारित रूप से चर्चा की और उन्हें अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन पर ज्ञान और कौशल विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जिससे उन्हें रोजगार और आजीविका सुरक्षा में मदद मिलेगी। डॉ. दास ने प्रशिक्षुओं को भारत के अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी क्षेत्र में उपलब्ध नए उद्यमशीलता अवसरों के बारे में भी जानकारी दी।

शेखपुरा जिले में ऐसे बहुत सारे जल संसाधन हैं जो किसानों की आजीविका विकास में मददगार साबित हो सकते हैं क्योंकि यहाँ अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी के विकास के माध्यम से आजीविका में सुधार की पर्याप्त संभावनाएं हैं। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन के प्रति किसानों के ज्ञान और कौशल विकास के साथ उनके दृष्टिकोण को भी मात्स्यिकी द्वारा रोजगार उन्मुख करना है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में मछली चारा प्रबंधन, मछलियों में रोग एवं विषाणु संक्रमण प्रबंधन, मिट्टी और जल रसायन विज्ञान, प्रेरित प्रजनन, मिश्रित मछली पालन, सजावटी मत्स्य पालन, पिंजरे में मछली पालन तथा मछली पालन का आर्थिक महत्व आदि सत्र शामिल किए गए थे। कार्यक्रम समाप्ति में प्रशिक्षुओं से फीडबैक भी लिया गया। इस कार्यक्रम में

ऑन-फील्ड एक्सपोजर विज़िट और फील्ड प्रदर्शनों के माध्यम से तालाबों और टैंकों में मछली उत्पादन बढ़ाने के लिए किसानों के प्रशिक्षण दिया गया है। अतः उक्त प्रशिक्षण कार्यक्रम का मछुआरों/ मत्स्य किसानों पर आजीविका में सुधार के लिए सकारात्मक कदम साबित हो सकता है।

केरल के वेम्बनाड झील में एट्रोप्लस सुरटेंसिस का प्रजनन और प्रतिपालन

भाकृअनुप -केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के कोच्चि अनुसंधान स्टेशन ने 8 मार्च 2022 को निकरा (एनआईसीआरए) परियोजना के तहत केरल के एर्नाकुलम जिले के मुलवुकाडु गांव में वेम्बनाड झील में पर्ल स्पॉट, एट्रोप्लस सुरटेन्सिस के 2500 बीजों का सफलतापूर्वक प्रजनन किया। इस मत्स्य पालन कार्यक्रम का उद्घाटन श्री अली अकबर, मुलवुकाडु पंचायत अध्यक्ष, एर्नाकुलम ने सिफ़री के कोच्चि अनुसंधान स्टेशन के प्रभारी अधिकारी की उपस्थिति में किया।

जलवायु परिवर्तन परिदृश्य में मत्स्य पालन की पूर्ति के लिए झील में एट्रोप्लस सुरटेन्सिस बीजों (टीएल: 2 सेमी; औसत वजन: 2-3 ग्राम) का प्रजनन किया गया। कार्यक्रम में डॉ. थैंकम थेरेसा पॉल, श्री. एस. मनोहरन, सीटीओ और श्री पी.वी. शाजिल, एसएसएस और एल्बिन अल्बर्ट सीशामिल थे और निकरा परियोजना के प्रधान अन्वेषक (पीआई) डॉ. यू.के. सरकार ने समन्वय किया । कार्यक्रम का संचालन संस्थान के निदेशक डॉ. बि .के. दास, के समग्र मार्गदर्शन में किया गया । कार्यक्रम में मछुआरें और हितधारकों ने भाग लिया।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- स्टॉकिंग के प्रभाव की जांच के लिए 5 राज्यों में से 65 जलाशयों का मूल्यांकन किया गया, जिससे पता चला कि स्टॉकिंग के कारण मछली की पैदावार में 30-35% की वृद्धि होती हैं और उपज में सकारात्मक वृद्धि होता हैं ।
- मणिपुर के लोकतक झील और उससे जुड़ी नदियों के धातुओं से होने वाले प्रदूषण की जांच की गई। यह पाया गया कि नदी और आर्द्रभूमि के पानी में भारी धातु सांद्रता मानक यूएस ईपीए मूल्यों से कम है और इसे प्रदूक्षणहीन माना जा सकता है।
- 5 से 11 मार्च 2022 के दौरान बक्सर से फ्रेजरगंज तक गंगा नदी में कुल 12 सर्वेक्षण किया गया, जिससे मत्स्य पालन, बैंथिक विविधता, प्लवक, पेरिफाइटन, पारिस्थितिकी और स्टॉक मूल्यांकन के विभिन्न पहलुओं की जांच की गई।
- फरवरी 2022 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड में मछली की पकड़ का अनुमान 03.64 टन था। पिछले महीने की तुलना में कुल मछली पकड़ने में लगभग 11.63% की वृद्धि हुई है। विदेशी मछलियों का योगदान इसमें सबसे अधिक था जिसके बाद दूसरे मछलियों का स्थान था। कॉमन कार्प इनमें हावी रहा।
- 17 मार्च 2022 को अरली घाट, प्रयागराज में एनएमसीजी परियोजना के तहत आईएमसी (लेबियो रोहिता, लेबियो कतला और सिरहिनस मृगला) के 30,000 अंगुलिकायों को छोड़ा गया।
- 15-16 मार्च 2022 में मणिपुर के लोकतक झील में पेंगबा के 40000 अंगुलिकायों को मत्स्य निदेशालय, मणिपुर के सहयोग से छोड़ा गया।
- गंगा नदी में हिल्सा मछली के संरक्षण के लिए फरक्का अपस्ट्रीम में 4 लाख हिल्सा स्पॉन का प्रजनन किया गया।

बैठकें

- संस्थान के निदेशक ने 2 मार्च, 2022 को "महिला सशक्तिकरण के साथ सतत विकास" पर राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए केआईआईटी-डीयू और केआईएसएस-डीयू और कॉलेज ऑफ बेसिक साइंस एंड ह्यूमैनिटीज, ओयूएटी के सहयोग से आईएससीए भुवनेश्वर चैप्टर में भाग लिया और "मात्स्यिकी हस्तक्षेप के माध्यम से महिला सशक्तिकरण पर सतत विकास" पर मुख्य भाषण दिया।
- संस्थान ने 3 मार्च, 2022 को आईसीएआर-सीफा, भुवनेश्वर के साथ बैठक में भाग लिया और एनईपीपीए परियोजना के तहत स्मार्ट एक्वाकल्चर पर चर्चा की।
- संस्थान के निदेशक ने ओडिशा के मत्स्य पालन निदेशक, भारत सरकार के साथ एक बैठक में भाग लिया। 4 मार्च, 2022 को केज कल्चर प्रोग्राम के तहत हीराकुंड जलाशय में पर्यावरणीय जलीय जीव स्वास्थ्य निगरानी पर यह बैठक हुई ।
- संस्थान के निदेशक ने 5 मार्च 2022 को नोकी बिजनेस पार्क, बालासोर, ओडिशा में एक्वाकल्चर मीट, स्मार्ट एक्वा एक्सपो इंडिया 2022 के तीसरे संस्करण के समापन समारोह में भाग लिया और प्रमुख भाषण दिया।
- संस्थान के निदेशक और वैज्ञानिकों ने 12 मार्च 2022 को प्रधान मंत्री मत्स्य संपदा योजना (पीएमएमएसवाई) के तहत मत्स्य निर्यात संवर्धन (एनसीडीसी) कार्यशाला में भाग लिया।
- उभरते परिदृश्य में भारतीय जलीय कृषि क्षेत्र में चुनौतियों और अवसरों पर विचार मंथन सत्र 22 मार्च 2022 को संस्थान में आयोजित किया गया था। 50 से अधिक प्रतिभागियों ने बदलते परिदृश्य में भारतीय मात्स्यिकी क्षेत्रों की चुनौतियों पर चर्चा की।
- घरेलू स्तर पर विपणन की जाने वाली मछली के प्रसंस्करण, वितरण और खपत में चुनौतियों और अवसरों पर दूसरा विचार-मंथन सत्र 22 मार्च 2022 को आयोजित किया गया। 70 से अधिक प्रतिभागियों ने इस विषय पर चर्चा और विचार-विमर्श किया।
- संस्थान ने 8 मार्च 2022 को एम.आर. एक्वाटेक, भुवनेश्वर के साथ पांच साल के लिए फाइबरग्लास-प्रबलित पॉलिमर कोराकल और फाइबरग्लास-प्रबलित पॉलिमर सजावटी मछली प्रजनन और पालन टैंक नामक दो उत्पादों का व्यवसायीकरण किया।
- संस्थान ने 10-11 मार्च 2022 को भोपाल में सरदार सरोवर जलाशय में जलाशय मात्स्यिकी प्रबंधन पर एमपी फिश फेडरेशन, भोपाल और नर्मदा कंट्रोल अथॉरिटी, इंदौर के साथ बैठक में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से 14 मार्च 2022 को आयोजित "नदी घाटी परियोजनाओं" के लिए विशेषज्ञ मूल्यांकन समिति की 25वीं बैठक में भाग लिया।
- आईएफओ 2022 सम्मेलन के हिस्से के रूप में 23 मार्च 2022 को आयोजित भारत में जलीय कृषि क्षेत्र की नीतिगत अनिवार्यताओं, अनुसंधान आवश्यकताओं और जनशक्ति आवश्यकताओं पर उद्योग-संस्थान के बीच एक इंटरफेस बैठक आयोजित की गई। डॉ विक्टर सुरेश, तकनीकी निदेशक, ग्रोवेल फीड्स, श्री रवि कुमार येलंकी, एमडी, वैशाखी बायो-मरीन प्राइवेट लिमिटेड, श्री एस मोहंती, जीएम, अवंती फीड्स लिमिटेड, श्री एस चंद्रशेखर, यूएस सोया एक्सपोर्ट काउंसिल, डॉ. मनोज एम. शर्मा, एमडी, मयंक एक्वा फार्म्स ने एक्वाकल्चर उद्योग का प्रतिनिधित्व किया। इस बैठक के दौरान अनुसंधान संस्थान और उद्योग के बीच संबंधों पर चर्चा की गई।
- 23 मार्च 2022 को हिल्सा पर एक संगोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें भारत, बांग्लादेश और म्यांमार के वक्ताओं ने बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में हिल्सा मत्स्य के संरक्षण और प्रतिपालन के बारे में चर्चा की। इस बैठक में 100 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण/ जागरूकता कार्यशाला :

- 8-14 मार्च, 2022 के दौरान मुंगेर जिले, बिहार के मछली किसानों के लिए " अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें मुंगेर के 31 मछुआरों ने भाग लिया।
- संस्थान ने 7 मार्च से 17 मार्च 2022 तक गंगा नदी की स्वदेशी मछली के संरक्षण और डॉल्फ़िन संरक्षण की दिशा में 6 जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया। इन कार्यक्रमों में 560 मछुआरों ने भाग लिया।

सिफरि समाचार पत्रों एवं संचार माध्यम में

THE TIMES OF INDIA

Tips from experts to increase fish production, boost income

Sanjib Chakraborty | TNN

Kolkata: Bengal will witness a quantum jump in production of Pacific prawns, white shrimps, penaeus, mourala and amola in the next four-five years. The Indian Council of Agricultural Research-Central Inland Fisheries Research Institute (ICAR-CIFRI) has set a 220 lakh tonne target for this period. With a rise in production, the prices are expected to drop and give relief to fish-lovers.

The production target and the ways to augment it were discussed at a three-day conference titled 'Indian Fisheries Outlook (IFO) 2022' at CIFRI, Barrackpore. Among those present were Sunderbans affairs minister Bankim Chandra Hazra, Kerala University of Fisheries VC Riji John, fishery science deputy director general DK Jena and ICAR-CIFRI director BK Das. The discussions also veered towards doubling fishermen's income by updating knowledge on fisheries and aquaculture.

"The aquaculture sector contributed to the national food as well as nutritional security," said Hazra. "Apart from production issues, due focus needed to be given on quality and safety," added Jena.

"The IFO 2022 has provided a platform for all research institutes, students and aquaculture professionals to share their knowledge and interact with farmers and all other stakeholders," said Das.

सन्मार्ग

बैरकपुर में इंडियन फिशरीज आउटलुक-22 तीन दिवसीय कार्यक्रम की शुरुआत

सन्मार्ग संवाददाता

बैरकपुर : दो सालों तक चली महामारी से देश भर में अर्थव्यवस्था प्रभावित हुई, जिससे उबरने के लिए देश भर के विभिन्न क्षेत्रों में संस्थान काम कर रहा है। इस क्रम में मत्स्य उत्पादन को बढ़ाने और इससे जुड़कर लाखों लोगों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में आईसीएआर-सेंट्रल इनलैंड फिशरीज रिसर्च इंस्टीट्यूट की ओर से तीन दिवसीय कार्यक्रम इंडियन फिशरीज आउटलुक-2022 का आयोजन किया गया है।

मंगलवार को कार्यक्रम का उद्घाटन राज्य के मंत्री बंकिमचंद्र हाजरा, विवेकानंद मिशन के सचिव सुपर्णनंद महाराज, आईसीएआर के डेपुटी डायरेक्टर डॉ. जे.के. जाना, इंस्टीटयूट के डायरेक्टर डॉ. बसंत कुमार जाना, डॉ. रिजी जॉन के, डॉ. बी.बी. नायक ने किया। इस दौरान देश भर के कई वैज्ञानिकों व अन्य विशिष्ठ जनों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम को लेकर संस्थान के निदेशक **डॉ. बसंत कुमार दास** ने कहा कि देश में मत्स्य पालन व उत्पादन में काफी कुछ करने को है जिससे जुड़कर लाखों लोग आत्मनिर्भर हो सकते हैं। इस क्रम में उत्पादन बढ़ाने, किसी भी वॉटर बॉडी में मछली पालन करने को लेकर वैज्ञानिकों के कई सुझाव हैं जिसकी जानकारी को सर्वसाझा करने के लिए ही इस आउटलुक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में रजिस्ट्रेशन से लेकर कार्यशाला तक की भी व्यवस्था की गयी है। इससे देश भर से लगभग 5 सौ वैज्ञानिक, छात्र और उद्योगपति जुड़े हैं। हमें पूरा भरोसा है कि इसका लाभ लोगों को मिलेगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार ने सिंगुर में मत्स्य पालन की शुरुआत की है जिसमें हमारा पूरा सहयोग रहेगा। मंत्री **बंकिमचंद्र हाजरा** ने कहा कि मछली पालन को राज्य सरकार ने भी बढ़ावा देते हुए कई परियोजनाओं की शुरुआत की है। इससे जुड़कर ग्रामों में लाखों लोग आत्मनिर्भर बने हैं।

बैरकपुर में इंडियन फिशियरीज आउटलूक-2022 के उदघाटन कार्यक्रम को संबोधित करते अधिकारी बी.के. दास

মৎস্য চাষের উন্নয়নে গবেষণা

The Samaja

‘ସିଫ୍ରି’ର ତିନି ଦିନିଆ ସମ୍ମିଳନୀ ଉଦ୍‌ଯାପିତ

ଫଟୋ : ଯୋଗେନ୍ଦ୍ର ଧଳ

କଲକାତା, ୨୪।୩ (ନି.ପ୍ର): ଇଣ୍ଡିଆନ୍ ଫିସରିଜ୍ ଆଉଟ୍‌ଲୁକ୍‌ର ତିନିଦିନିଆ ଜାତୀୟ ସ୍ତର ସମ୍ମିଳନୀ ଆଜି ଉଦ୍‌ଯାପିତ ହୋଇଛି। ଏହି ସମ୍ମିଳନୀରେ ଭାରତବାହାରୁ ବହୁ ବୈଜ୍ଞାନିକ, ଗବେଷକ ଯୋଗ ଦେଇଥିଲେ। ଏହା ସହିତ ମାଛ ଚାଷୀ ଏବଂ ମାଛ ବ୍ୟବସାୟର ଉନ୍ନତି ପାଇଁ ପ୍ରମୁଖ ଭୂମିକା ପାଳନ କରିଥିବା ସଂସ୍ଥାର ପ୍ରତିନିଧିମାନେ ମଧ୍ୟ ଯୋଗ ଦେଇଥିଲେ। ଆଜିର ଉଦ୍‌ଯାପନ ସଭାରେ ସିଫ୍ରିର ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ଡକ୍ଟର ବସନ୍ତ କୁମାର ଜେନା ପୌରୋହିତ୍ୟ କରି ପ୍ରତ୍ୟେକଙ୍କୁ ସ୍ୱାଗତ ଜଣାଇବା ସହ ମତ୍ସ୍ୟଚାଷ ଏବଂ ପ୍ରକ୍ରିୟାକରଣ ମଧ୍ୟରେ ଏହାର ବିକାଶ କିଭଳି ଘଟିପାରିବ ସେ ବିଷୟରେ ସୂଚନା ଦେଇଥିଲେ। ମୂଳତଃ ଭାରତ, ବାଂଲାଦେଶ, ମିଆଁମାର ଭଳି ୫ଟି ଦେଶର ପ୍ରତିନିଧି ଏଥିରେ ଯୋଗ ଦେଇ ବଙ୍ଗୋପସାଗର ଇଲିଶି ମାଛ ପ୍ରସଙ୍ଗରେ କେତେକ ଉଦାହରଣ ଦେଇଥିଲେ। ବିଶେଷକରି ଇଲିଶିର ବୈଜ୍ଞାନିକ ଚାଷ ପଦ୍ଧତି, ପ୍ରଜନନ ଉପରେ ଆଲୋଚନା ହୋଇଥିଲା। ଯାହାକି ମତ୍ସ୍ୟଚାଷୀଙ୍କ ପାଇଁ ଏହା ଏକ ସୁଯୋଗ। ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ଡକ୍ଟର ଦାସ କହିଥିଲେ ଯେ ଗଙ୍ଗା, ବ୍ରହ୍ମପୁତ୍ର, ମେଘନା ଭଳି ନଦୀରେ ମାଛର ଗୁଣବତ୍ତା ଏବଂ କିସମ ସମ୍ପର୍କରେ ବହୁ ତଥ୍ୟ ଆବିଷ୍କାର ହୋଇଛି, ଯାହାକି ଗବେଷକମାନେ ବହୁମୁଖୀ ଆଭିମୁଖ୍ୟ ପ୍ରକାଶ କରିଥିଲେ। ବିଶେଷ କରି ଜାତୀୟ ଗଙ୍ଗା ମିଶନର ମୁଖ୍ୟ ବିନିଯୋଗକାରୀ ବିଷୟ ମଧ୍ୟ ଏଥିରେ ଗୁରୁତ୍ୱ ପାଇଥିଲା। ସଭାରେ ପୂର୍ବତନ ଉପାଚାର୍ଯ୍ୟ ଡକ୍ଟର ଡବ୍ଲ୍ୟୁଏସ୍ ଲାଟନା, ପୂର୍ବତନ ଡିଜି ଡକ୍ଟର ବିସି ଏକନାଥ, ବୈଜ୍ଞାନିକ ଡକ୍ଟର ଭିଡି ସୁଗନାନ୍, ପୂର୍ବତନ ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ଡକ୍ଟର ଏମ୍ ସିହ୍ନା, ପୂର୍ବତନ ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ ଡକ୍ଟର ଏପି ଶର୍ମା, ଡକ୍ଟର କ୍ରିଷ୍ଣନ୍, ଡକ୍ଟର ବିବି ନାୟକ, ଡକ୍ଟର ବିକେ ବେହେରା, ଡକ୍ଟର ପ୍ରଣୟ କୁମାର ପରିଡ଼ା, ଡକ୍ଟର ହିମାଂଶୁ ସ୍ୱାଇଁ ପ୍ରମୁଖ ଆଲୋଚନାରେ ଅଂଶ ନେଇଥିଲେ। ସିଫ୍ରି ପରିସରରେ ରଙ୍ଗୀନ ମାଛଚାଷର ପ୍ରଦର୍ଶନୀ ଅନୁଷ୍ଠିତ ହୋଇଥିଲା। ଏହା ସହିତ ଆଲୋଚନା ସଭା, ଗୋଷ୍ଠୀ ଆଲୋଚନା ଏବଂ ମତ୍ସ୍ୟଚାଷୀମାନେ ସେମାନଙ୍କ ସମସ୍ୟା ସମ୍ପର୍କରେ ବକ୍ତବ୍ୟ ରଖିଥିଲେ। ସଭାରେ କୃତୀଙ୍କୁ ସମ୍ବର୍ଦ୍ଧିତ କରାଯାଇଥିଲା।

इंडियन फिशरीज आउटलुक-2022 : सम्मेलन का उद्घाटन मंत्री बंकिम चंद्र हाजरा पश्चिम बंगाल एवं निदेशक सिफरी बैरकपुर और अध्यक्ष पीएफजीएफ डॉ. बिके दास ने किया

सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में भारतीय मत्स्य पालन को बढ़ावा देना जरूरी

बैरकपुर » दबंग रिपोर्टर

इंडियन फिशरीज आउटलुक-2022 में सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में भारतीय मत्स्य पालन को बढ़ावा देना विषय पर आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), बैरकपुर, में 22 मार्च को हुआ। सम्मेलन का आयोजन 22 से 24 मार्च तक सिफरी बैरकपुर, प. बंगाल द्वारा इनलैंड फिशरीज सोसायटी ऑफ इंडिया और प्रोफेशनल फिशरीज ग्रेजुएट फोरम (पीएफजीएफ), मुंबई के सहयोग से किया जा रहा है।

सम्मेलन का उद्घाटन मुख्य अतिथि, श्री बंकिम चंद्र हाजरा माननीय मंत्री, सुंदरबन मामले और विकास, पश्चिम बंगाल सरकार ने किया। कार्यक्रम के सम्मानित अतिथियों में स्वामी सुपर्णानंद महाराज, मानद सचिव, रामकृष्ण मिशन इंस्टिट्यूट ऑफ कल्चर, कोलकाता, डॉ. रिजी जॉन, कुलपति, केरल यूनिवर्सिटी ऑफ फिशरीज एंड ओशन स्टडीज प्रमुख थे। उद्घाटन समारोह डॉ. जेके जेना, उप महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान) की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। पीएफजीएफ के महासचिव, डॉ. बीबी नायक ने कहा सिफरी, बैरकपुर इनलैंड फिशरीज सोसायटी ऑफ इंडिया, बैरकपुर और प्रोफेशनल फिशरीज ग्रेजुएट फोरम, मुंबई के समन्वित प्रयास से इस सम्मेलन का आयोजन संभव हो सका है और इसका उद्देश्य सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने में देश के मत्स्य पालन पर ध्यान केंद्रित करना है।

डॉ. बिके दास, निदेशक, सिफरी, बैरकपुर और अध्यक्ष, पीएफजीएफ ने अपने स्वागत संबोधन में सम्मेलन के विषय के महत्व पर प्रकाश डालते हुए देश में अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी और इसके प्रबंधन की स्थिति को बताया। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन मत्स्य पालन और जलीय कृषि से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान केंद्रित करते हुए विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं,

सलाहकारों, छात्रों तथा अन्य हितधारकों के बीच विचारों का आदान-प्रदान करने, जानकारी साझा करने, और आम सहमति बनाने के लिए एक मंच प्रदान करेगा। डॉ. जेके जेना, उप-महानिदेशक (मत्स्य विज्ञान) भारतीय कृषि अनुसंधान, नई दिल्ली तथा उद्घाटन कार्यक्रम के अध्यक्ष ने संबोधन में भारतीय कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था उन्नयन में मत्स्य पालन क्षेत्र के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि मत्स्य पालन और जलीय कृषि के लिए सतत विकास लक्ष्य जैसे भूखमरी उन्मूलन का लक्ष्य, उत्तम स्वास्थ्य और जन कल्याण, जलीय जीवन और स्थल जीव आदि अधिक प्रासंगिक हैं। उन्होंने कहा कि अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन और जलीय कृषि का भारत के मत्स्य पालन में 65 प्रतिशत से अधिक योगदान है और जलीय पारिस्थितिकी तंत्र, उनके जैविक समुदायों और मत्स्य पालन पर जल की वेग गति, प्रदूषण, असिमित वर्षा, वैश्विक तापमान वृद्धि, जलीय संसाधनों का अति-दोहन, मछलियों का अनियंत्रित शिकार के कारण हानिकारक प्रभाव पड़ रहा है। उनके अनुसार प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत 22 मिलियन टन मछली उत्पादन के लक्ष्य के साथ, इस क्षेत्र में और अधिक निवेश करने और अधिक उद्यमियों को लाने का समय आ गया है।

डॉ. रिजी जॉन, कुलपति, केयूएफओएस ने भारत में मत्स्य पालन क्षेत्र के महत्व पर बात की। उन्होंने कहा 1969 में भारत में केवल एक मात्स्यिकी महाविद्यालय था, लेकिन वर्तमान में तीस कॉलेज हैं। उन्होंने कहा मछली अब न केवल सस्ते प्रोटीन के रूप में बल्कि स्वास्थ्यवर्धक भोजन के रूप में भी पहचानी जाने लगी है।

श्री बंकिम चंद्र हाजरा, मंत्री सुंदरबन मामले और विकास, पश्चिम बंगाल सरकार ने मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में पश्चिम बंगाल और भारत के आर्थिक विकास में मत्स्य क्षेत्र द्वारा निभाई महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए भारतीय जलीय कृषि में वर्तमान प्रवृत्ति, मत्स्य पालन के लिए मत्स्य संसाधन प्रबंधन, उत्पादन में सुधार के लिए जैव प्रौद्योगिकी, टिकाऊ मत्स्य पालन के लिए स्वास्थ्य पर्यावरण प्रबंधन, मत्स्य पालन के बाद तकनीक और मूल्य संवर्धन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।

स्वामी सुपर्णानंद महाराज, मानद सचिव, रामकृष्ण मिशन इंस्टिट्यूट ऑफ कल्चर, कोलकाता एवं सम्मानित अतिथि ने संबोधन में यह आशा व्यक्त की कि यह सम्मेलन भविष्य के लिए उपयोगी दिशा-निर्देश करने का कार्य करेगा। ... अंतर्गत इससे देश की सम्पदा, संस्कृति, विज्ञान और धर्म और विभिन्न विचारों पर चर्चा ... उन्होंने जोर दिया कि जहां विज्ञान और संस्कृति दो रंगों के समान हैं जबकि विज्ञान और धर्म विपरीत ध्रुव हैं।

1st INDIAN FISHERIES OUTLOOK 2022 এর আয়োজন

একদিন KOLKATA EDITION - 23 Mar 2022 - Page 3

মাছের উৎপাদন বাড়াতে সেমিনার

नदियों में मत्स्य प्रजातियों के पुनरुद्धार हेतु सिफरी के प्रयास

बैरकपुर » दबंग रिपोर्टर

भाकृअनुप-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (सिफरी), बैरकपुर ने गंगा नदी में फरक्का बैराज के ऊपरी क्षेत्र में 1,80,000 हिलसा के अंडों को निषेचित करके गंगा नदी में प्रवाहित किया जिससे हिलसा मछली के पुनरुद्धार को एक नई दिशा मिल सके। हमारे देश में सिफरी का यह प्रयास देश की प्रथम घटना है। हिलसा मछली गंगा-ब्रह्मपुत्र-मेघना बेसिन की सबसे बहुमूल्य प्रजाति है और पश्चिम बंगाल और बंगलादेश में सबसे ज्यादा पसंद की जाती है। निरंतर मानवजनित कार्यकलापों के कारण, हिलसा प्रजाति गंगा नदी में विशेष रूप से फरक्का, पश्चिम बंगाल और प्रयागराज, उत्तर प्रदेश के मध्य भाग में घटती होती जा रही है। गंगा नदी में मछली प्रजातियों की तत्काल पुनरुद्धार के महत्व को देखते हुए, सिफरी, बैरकपुर ने राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) के सहयोग से, वयस्क हिलसा की रैंचिंग को आरंभ किया गया है। वर्ष 2020 से लगभग 45000 से अधिक वयस्क हिलसा मछली को रैंचिंग किया गया है और इसके सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए हैं। निषेचित अंडों की रैंचिंग हिलसा के जर्मप्लाज्म संरक्षण और प्रजातियों पुनरुद्धार की दिशा में एक नया आयाम माना जा रहा है। निषेचित हिलसा के अंडों की रैंचिंग द्वारा प्रजातियों का पुनरुद्धार हमारे देश में यह एक प्रथम प्रयास है जिससे खुला जलक्षेत्रों में देशी जर्मप्लाज्म संरक्षण किया जा सकेगा। जलीय परितंत्र में मत्स्य आवास पुनर्स्थापित करने के लिए हितधारकों की भागीदारी, प्रजातियों का कृत्रिम प्रजनन और मत्स्यपालन, खुला जल में संकटग्रस्त प्रजातियों का पुनरुद्धार आवश्यक हैं। मछली को निषेचित करने से पहले, फरक्का के ऊपरी भाग में उपयुक्त स्थान का चयन किया गया, ताकि उच्च जल प्रवाह, अधिक गहराई और मानव कार्यकलापों से बचाया किया जा सके। प्रक्रिया के दौरान, वयस्क नर-मादा हिलसा को ड्राई स्ट्रिपिंग विधि के माध्यम से प्रजनित किया गया था। निषेचन दर 85-90% दर्ज किया गया। निषेचित अंडों को ऑक्सीजन के साथ पैक कर चयनित स्थल पर पहुंचाया गया। मछलियों के परिवहन के समय जल के तापमान वृद्धि से बचाने के लिए, सुबह या शाम का समय का ही चयन किया गया। यह महत्वपूर्ण कार्य संस्थान के निदेशक, डॉ. बि.के.दास के मार्गदर्शन में किया गया।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है